मूल्य रु। ५-००

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख • सलंग अंक १४१ • जनवरी-२०१९

श्री कपिश्वरधाम मकनसर मंदिर में
मूर्ति प्रतिष्ठा करते हुए श्रीहरि के आँठवे वंशज
प.पू. लालजी महाराजश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री।

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

(१) श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में खरमास धून महोत्सव के अवसर पर धून करते हुए संत हरिभक्त तथा रास खेलते असारवा गुरुकुल के विद्यार्थी। (२) धिणोज (मेहसाना) मंदिर के पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री। (३) वागोसणा गाँव में त्रिदिनात्मक पारायण। (४) कलोल जूना चोरा मंदिर में कथा पारायण करते हुए वक्ताश्री तथा अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत स्वामी तथा संत मंडल।

આપણા વિવિધ મંદિરોમાં શાકોત્સવના દર્શન

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १२ ● अंक : १४१

जनवरी-२०१९

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८

श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

श्री स्वामिनारायण म्युजियम

नारायणपुरा, अहमदाबाद.

फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स : २७४१९५९७

प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए

फोन : २७४९९५९७

www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८

श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से

तंत्रीश्री

स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,

अहमदाबाद-३८० ००१.

मो. ८२३८००१६६६

मो. ९०९९०९८९६९

magazine@swaminarayan.in

www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये

E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	धूपबत्ती	०६
०४.	श्रीहरिकृष्ण के स्वरुप को हृदय कमल में धारण करना	०८
०५.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुख से अमृत वचन	१०
०६.	अर्वाचीन गुजराती भाषा में उपरोक्त पत्र	१३
०७.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१९
०८.	सत्संग बालवाटिका	२२
०९.	भक्ति सुधा	२४
१०.	सत्संग समाचार	२६

अस्मदीयम्

खरमास की तीव्र ठंडक में आप सभी हरिभक्तो ने पूरे महीने भर षडअक्षरी महामंत्र सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण भगवान के अलौकिक नाम स्मरण का गान किये। संसार के लोग बिस्तर में रहकर नाक बजाते है और भगवान स्वामिनारायण के आश्रित भक्त प्रातः काल स्नान पूजा पाठ नित्यकर्म करके अपने शिखरबद्ध या हरिमंदिर में महामंत्र धुन के साथ सपरिवार बैठकर चौरासी लाख जन्म के बाद अन्त में महामूल मनुष्य देह मिला है। उसे भगवान के साथ सम्बन्धबनाकर सर्वोपरी श्रीहरि को पहचान कर धीरे-धीरे कल्याण हेतु तत्पर हो जाना चाहिए। यही इस मनुष्य जन्म की सार्थकता है।

''जिसको साक्षात् भगवान की प्राप्ति मिली है। वह अंत समय में याद रहे या न रहे तो उनका अहित नही होता है। उसकी भगवान रक्षा करते है। और भगवान से विमुख है तो बोलते-चलते शरीर त्यागता है तो भी उसका कल्याण नही होता है। और वह यमपुरी में जाता है। और कितने लोग पापी कसाई जो बोलते-चलते शरीर छोडते है और भगवान के भक्त होते है। और अकाल मृत्यु होती है तो क्या उनका अकल्याण और उस पापी का कल्याण होगा ? नहीं होगा। तब इस श्रुति का अर्थघटन यह कर सकते है कि जैसी वर्तमान में उसकी मति होती है वही अंतकाल में गति होती है। इस लिए जो भक्त है उनके मति में यह होता है कि''मेरा कल्याण हो ही रहा है। तो उनका अन्तकाल में कल्याण होता ही है। और जिन्हे संत की प्राप्ति नही हुई है तथा भगवान स्वरुप की भी प्राप्ति नही हुई है, उसके मति में ऐसा होता है कि मैं अज्ञानी हूँ मेरा कल्याण नही होगा। जिसकी जैसी मति वैसी उसकी गति होती है। और जो भगवान के दास होते है। उन्हे कुछ करना ही नहीं पड़ता है। ऐसे लोतो का दर्शन करने से दूसरे जीवो का भी कल्याण होता है। इसमें उनका कल्याण हो तो उसमें क्या कहा जायेगा ?(ग.प्र.प्र. १४)

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

પ.પૂ. લાલજી મહારાજશ્રીના કાર્યક્રમની

रुपरेखा

(दिसम्बर-२०१८)

७ धमासणा श्री स्वामिनारायण मंदिर के पाटोत्सव - शाकोत्सव के अवसर पर आगमन।

१० श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर पाटोत्सव अवसर पर आगमन।

११ भाटेरा श्री स्वामिनारायण मंदिर कथा के अवसर पर आगमन।

१२ श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (से-२) पाटोत्सव अवसर पर आगमन।

१३ नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर मकनसर (मोरबी) मूर्ति प्रतिष्ठा स्वयं के हाथो द्वारा सम्पन्न किये।

१४ मेडा (मेढा) श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनो का) मूर्ति प्रतिष्ठा और भाईयो के मंदिर का शताब्दी महोत्सव स्वयं के कर कमलो द्वारा किये।

१५ श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोल (पंचवटी) पाटोत्सव अवसर पर आगमन।

१६ श्री स्वामिनारायण मंदिर टांकिया पाटोत्सव अवसर पर और कूबडथल गाँव में शाकोत्सव अवसर पर आगमन।

१७ काशीन्द्रा गाँव में शाकोत्सव अवसर पर आगमन।

१९ सोजा गाँव में कथा के अवसर पर आगमन।

२१ वडनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर माखणिया लालजी महाराज का पाटोत्सव अवसर पर आगमन

२८ धिणोज गाँव में आगमन।

२९ बदपुरा गाँव में आगमन।

धूपभक्ती

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

हमारे वैदिक पौराणिक पूजा अर्चना की बिधिमें पंचोपचार और षोडशोपचार के द्वारा देवता-देवियो-आराध्यदेवो की पूजा की जाती है। उन सोलह उपचारो में सर्व महत्वपूर्ण उपचार ''धूप'' उपचार माना जाता है। अन्य उपचारो के अभाव में जल अक्षत द्वारा श्री परिकल्पना करके पूर्ण किया जाता है । लेकिन ''धूप'' उपचार की कल्पना अन्य विकल्प से नही किया जा सकता है। पूजा के प्रारम्भ में देवता-देवियो को आमंत्रण आगमन को धूप के माध्यम से उस रुप मूर्तिया सोपारी में आवाहन करके विरामजान होते है। तथा प्रतिष्ठित स्वरुप में पूजा के प्रारम्भ में ''धूप'' की सुगंधद्वारा-देवी-देवता को जागृत करने की परम्बरा है । ''धूप'' के आकर्षण से अगम-अगोचर (उजागर) स्थान में रहे चैतन्य स्वरुप मात्र धूप के निवेदन मात्र से प्रगट प्रत्यक्ष उपस्थित हो जाते है । इसके पश्चात अर्चावतार स्वरुप हो यानिमित्यिक कार्य प्रसंग, प्रसंगोपसात आवाहन पूजा का समय हो, सूक्ष्म देहधारी असंख्य सात्विक, राजसिक, तामसिक चैतन्य स्वरुप तथा भगवान के अवतारी स्वरुप में मृत्यु लोक में आवाहन करना । उस स्वरुप में सुगंधद्रव्यो को धूप के माध्यम से निवेदन किया जाय तो वे तत्काल हाजिर हो जाते है। क्यो कि उन द्रव्यो मे उनका स्थान निश्चित किया जाता है।

धूप में रहे सुगंधित द्रव्य देवी-देवताओ को आकर्षित करते है तथा वातावरण में नकारात्मक तत्वो का नाश करते है । हानिकारक जीव उसी प्रकार नकारात्मक मलिन आत्मा तत्काल धूप की सुगंधको सहन नही कर पाते वहाँ से चले जाते है । साथ ही साथ सकारात्मक चैतन्य स्वरुप सुखरुप में वहाँ उपस्थित रहते है । यह ब्रह्मांड सत, रज तथा तम त्रिगुणो से बना होता है। और उत्पत्ति-स्थिति प्रलय के जिम्मेदार तत्वो में ये तीन गुण मुख्य होते है । अर्थात् नकारात्मक तामसी तत्व वायु मंडल में अभिन्न रुप में रहता है। अर्थात् सात्विक स्वरुप को अखंड रखने के लिये तामसी से मुक्त करना आवश्यक है।

पूजातंत्र के मतानुसार देवकार्य में उपयोगी धूप सोलह प्रकार की प्रमाणित की गई है।(१) अगर (२) नगर (३) कुण्ठ (४) शैलज (५) शर्करा (६) नागर (७) चंदन (८) इलायची (९) तज (१०) नखनखी (११) मुसीर (१२) जहामासी (१३) कपूर (१४) रतांजली (१५) सदलन (१५) गुंगल इस प्रकार सोलह प्रकार की धूप होती है । तथा दश प्रकार के सुगंधित द्रव्यो को चंदन, कुण्ठ, नखल, राल, सरकटा, इक्षुरस, नखगध, जटामाशी, लघु, क्षौत इस तरह दस दस प्रकार की समान मात्रा का मिक्षण तैयार किया जाता है। इस उत्तम धूप को दशांग धूप कहा जाता है। गुगल, लोहबान, सरवाव को गाय के घी में मिक्ष करके गाय के गोबर (गोहरा) के उपर धूप की जाती है। इसे

भी उत्तम धूप कहते है। इस धूप से मनुष्य के मस्तिष्क के विकार को दूर करता है।

नित्य नियम की पूजा हो अथवा सामसुबह की पूजा आरती के पाँच तत्वो की पूजा के पदार्थ धूप के वायु तत्व का प्रतीक माना जाता है। जब आरती करते है या मंदिर में प्रतिष्ठा सेवा का रुप हो उनके सामने अगरबत्ती करने से वह स्वरुप भक्त की प्रार्थना-पूजा को स्वीकार करके प्रसन्न होते है। जब तबदीप धूप चलता है तब तक वह स्वरुप प्रगट होकर पार्थना स्वीकार करते है। इस कारण से मंदिर में अखण्ड दीप रखा जाता है। अचल प्रतिष्ठित स्वरुप मूर्ति में सदैव प्रगट होता है परन्तु धूप-दीप के प्रभाव से उस स्वरुप को अनंत ऊर्जा का स्तोत्र और अलौकिक दिव्य तत्वो का खजाना का अखंड प्रवाह निकलता रहा है। वहाँ पर उपस्थित भक्त की सर्व मनोकामना पूर्ण होती है।

धूप दीप के अभाव में हनुमानजी जैसे तपस्वी भजन वाले भक्त शिरोमणी स्वरुप तत्काल ध्यानस्थ अवस्था में चले जाते है। इस कारण से भक्त की प्रार्थना यऱात्त में सकल नही होता है। क्योकि अक्षरबीज मंत्र से भी धूप-दीप होता रहता है।

वर्तमान समय में बजार में आनेवाली अगरबत्ती बाँस की तीलियों की बनी होती है। बाँस की तीली पर केमिकल वाले पदार्थ चिपकाकर अगरबत्ती तैयार की जाती है। वास्तव में शास्त्र में बाँस को सुलगाना शास्त्र में निषेधहै। बाँस को सौभाग्य का प्रतीक माना (जलाना) जाता है। उसको जलाने से भाग्य खराब होता है। घर में बाँस जलाने से घर में अमंगल होता है। अगरबत्ती के माध्यम से बाँस जलाने से विषैली हवा निकलती है। जो स्वास्थ्य पर प्रभाव पडता है। फेग सूई के मतानुसार बाँस को जालाना मना है। तो धूप के बिना पूजा प्रार्थना आवाहन शक्य नही। वर्तमान समय में बाँस की तीली के अलावा धूपबत्ती बजार में मिलता है। तो इसके द्वारा धूप करना यह निर्दोष सरल मार्ग है।

वर्तमान समय में गौद्रव्य गोबर में से तथा कपूर चंदन में से बने शुद्ध सात्विक धूपबत्ती बाँस की तीली बिना मिलता है। उसका प्रयोग कर सकते है। कई संतो के मतानुसार देवता के समीप जो धूप जलाते है तो धूप के साथ ही साथ पूर्व दूषित कर्म भी जलता है। एक संत ने ऐसा भी कहे है प्रतिदिन धूप करने की श्रद्धा और शक्ति न हो तो प्रत्येक महीने के तेरस, चौदश, अमावस्या और पूर्णिमा के दिन अवश्य धूप करना चाहिए। धूप की संख्या के विषय में ईष्टदेव के लिए कुलदेव के लिये एक, कुलदेवी हेतु एक इस तरह दीन धूप होनी चाहिए। फिर भी एक ही धूप में तीनो का भाव करके एक धूप भी मान्य है।

प्रत्येक भगवान का स्वरुप तथा देव-देवी के स्वरुप वैदिक पौराणिक रुप से प्रमाणित प्रत्येक अलग-अलग गंधके साथ उस स्वरु के साथ जुडता है। अर्थात् जिस स्वरुप को जो सुगंधअर्पित करते है वह तत्व रुप में प्रगट होते है। उसका प्रमाण है कि कई मंदिर में देवताओ के गर्भ गृह से सुगंधित वातावरण का प्रवाह सतत बना रहता है। जिन मंदिरो की पूजा आरती शास्त्र के अनुसार होती है, जैसे कि अपने अहमदाबाद, मूली, भुज, वडताल, जेतलपुर, गढडा, जुनागढ, सारंगपुर, छपिया मदिरो के गर्भ गृह में अलग-अलग सुगंधका अनुभव मिलता है। केवल फूलो के श्रृंगार से ही नही भगवान की मूर्ति से सुगंधमात्र ही है। और बड़े-बड़े मंदिरो में सुगंधित बातावरण सदैव बना रहता है।

(१) धूप अर्थात् उत्तम वनस्तियो के रस से पैदा हुए पदार्थ जिससे उत्तम सुगंधऔर देवता को खुश करने वाले पदार्थ बनते है।

(२) पित्रो का आधार वायु हे। पितृ सुगंधित हवा के साथ अधिक खुश होकर आते है, तथा अपने वंशवालो को आशीर्वाद देते है।

(३) यं सुगंधका बीजाक्षर है।

(४) कई मुनियो के मतानुसार पीपल की लाख, मधु, सफेद चंदन भी मान्य किये गये है।

श्रीहरिकृष्ण के स्वरुप को हृदय कमल में धारण करना

- शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी (अमदावाद)

ताजा रखने हेतु प्रभु की मूर्ति को किस प्रकार सरलता से सदैव अपने हृदय में रख सके । अनेक प्रकार की युक्ति-प्रयुक्ति सीखते रहते है । उस में एक युक्ति आत्मसात करने के लिये श्री योगानंद मुनि इस अष्टक स्त्रोत्र में वर्णन करते है । योगानंद मुनि उत्तर गुजरात के गणथोर नामक गाँव में पवित्र क्षत्रिय परिवार में जन्म लेकर अहमदाबाद के पास कणभा गाँव में भगवान श्री स्वामिनारायण का दर्शन किये थे । और श्रीहरि के चरणकमलो में स्वयं को समर्पित करके जो हृदय में स्वरुप का दर्शन किये थे । वही स्वरुप को सदैव धारण कर सके इस सेवा में जुड गये । उनके सुंदर वर्णन का अर्थ हम सभी समझे ।

पुषपिताग्रावृत्तम् योगानन्द मुनि कृत

सजलजलदसुन्दरं समांगं सरसिरुहेक्षणमीक्षणीयमूर्तिम् ॥
निखिलभुवननायकैकनाथं हृदि हरिकृष्णमहं सदा स्मरामि ॥१॥

भगवान श्री स्वामिनारायण के हरिकृष्णनाम धारी स्वरुप का वर्णन करते हुए योगानन्द मुनि कहते है कि वर्षाऋतु के प्रारम्भ में अषाढ महिने के ताजे बाद लजो जल से पूर्ण है । वे वैसे बादलो जैसे श्याम है । सरोवर में पूर्ण रुप से विकसीत कमल पुष्प के समान मुखाकृति है । सभी अंग समान रुप से शोभित है । अर्थात् मुखाकृति में आँख, नाक, कान अधरीष्ठ और ललाट ऐसे शोभा देता है । लोको की आँखे देखती रह जाये । एक क्षण द्रशन नही झोडना है । वे परमात्मा स्वयं अनंत कोटि ब्रह्मांड के स्वामी नाथ नायक और कर्ता धर्ता है । ऐसे हमारे आराध्य देव भगवान श्रीहरिकृष्ण के स्वरुप को मैं अपने हृदय में सदैव स्मरण करु तथा धारण करु ।(१)

कलितललितनीलनुत्लवासः कटितटमंसतटे पटंदधानम् ॥
वसितविशदसुन्दरांबरं च हृदि हरिकृष्णमहं सदा स्मरामि ॥२॥

भगवान श्रीहरिकृष्ण ने अपने भक्तो को सुख देने के लिये अपने अंग के उपर सुंदर कला से रचित अनेक प्रकार की आकृति वाले श्याम (मेघ जैसे रंगवाले) जरी वाले वस्त्र धारण किये हुए है । रणभूमि में जाने वाले शूरवीरो

कुसुमरचितशेखरालिरम्यं शिरसि सुरक्तशिरः पटं दधानम् ॥
विविधकुसुमहारिकम्बुकण्ठं हृदि हरिकृष्णमहं सदा स्मरामि ॥३॥
भगणमुनिगणैर्वृत्तंयथेन्दु सदयदृशास्वजनान्विलोकयन्तम् ॥
मधुरवचनमोदितस्वभक्तं हृदि हरिकृष्णमहं सदा स्मरामि ॥४॥
रुचिकरपुटे विचालयन्तं नवतुलसीन्धनसंभवा सुमालाम् ॥
मुनिविहितसबीजसांख्ययोगं हृदि हरिकृष्णमहं सदा स्मरामि ॥५॥
हसितवदनचन्द्रचन्द्रिकाभिर्हतनिजभक्तहृदन्धकारतापम् ॥
प्रकटीतजगतीसधर्मभक्तिं हृदि हरिकृष्णमहं सदा स्मरामि ॥६॥
धृतिदमशमशीलसत्यशौच स्मृतिबलकीर्तितपः प्रगल्भतादयैः ॥
अपरिमितगुणयुतं च नित्यहादं हरिकृष्णमहं सदा स्मरामि ॥७॥
परनिजमहसा जनान्समाधौ प्रकृतिपराक्षरनैज धामनिष्ठाम् ॥
जगति निज तनुं च दर्शयन्तं हृदि हरिकृष्णमहं सदा स्मरामि ॥८॥

॥ इति श्रीयोगानन्दमुनि विरांचित हरिकृष्णस्मरणाष्टकम् ॥

भगवान के परम एकान्तिक भक्त हमेशा सव्यं के आराध्य परंब्रह्म परमात्मा सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण के अलौकिक स्वरुप को हमेशा अपने हृदय कमल में रखकर विचरण करते है । तो भी उस स्मृति कोो

की तरह अपनी रक्षा के लिये कवच बाँधे रहते है। उसी तरह श्रीहरिने सुंदर वस्त्र की भेट बाँधे है। अत्यधिक लम्बाई चौडाई वाला पीताम्बर धोती धारण किये है। ऐसे हमारे आराध्य देव भगवान श्रीहरिकृष्ण स्वरुप को मैं अपने हृदय में सदैव स्मरण करता हूँ तथा धारण करता हूँ।(२)

कुसुमरचितशेखरालिरम्यं शिरसि सुरक्तशिरः पटं दधानम् ॥
विविधकुसुमहारिकम्बुकण्ठं हृदि हरिकृष्णमहं सदा स्मरामि ॥३॥

मेरे प्रभु सुगंधित रंग-बिरगे पुष्पो से बहने हुए लम्बे तोरण को मस्तक के उपर धारण किये है। जो लाल रंग की पगड़ी में खोशे है। समुद्र में से पैदा शंख जैसी आकृति वाला कंठ गरदन पर अनेक प्रकार सुगंधित रंग बिरंगे फूलो का हार धारण किये है। ऐसे मेरे आराध्य देव भगवान श्रीहरिकृष्ण की मूर्ति मेरे हृदय में सदैव याद रहे तथा मैं धारण रखू।(३)

भगणमुनिगणैर्वृत्तंयथेन्दु सदयदृशास्वजनान्विलोकयन्तम् ॥
मधुरवचनमोदितस्वभक्तं हृदि हरिकृष्णमहं सदा स्मरामि ॥४॥

आकाश में स्थित असंख्य चमकते तारो से धिरा हुआ चन्द्रमां सभी का पोषण करता है। और शीतलता देता है। उसी तरह श्रीहरि के चारो तरफ महान तपस्वी परमहंसो का वास है। अपने भक्तो को करुणामयी दृष्टि से देखकर उन्हे सुख प्रदान करते है। उन्हे मधुर वचनो द्वारा वचनामृत देकर परमहंसो तथा सभी भक्तो को आनंद देते है। ऐसे मेरे आराध्य देव भगवान श्रीहरिकृष्ण की मूर्ति मेरे हृदय में सदैव याद रहे तथा मैं धारण रखू।(४)

रुचिकरपुटे विचालयन्तं नवतुलसीन्धनसंभवा सुमालाम् ॥
मुनिविहितसबीजसांख्ययोगं हृदि हरिकृष्णमहं सदा स्मरामि ॥५॥

प्रभु श्रीहरि संसार के जीव मात्र को अभयदान देने वाले अपने प्रिय हस्तकमल मुठ्ठीजो दर्शन योग्य है। उसका सुंदर आकार है। ऐसे अपने दाहिने हाथ की मध्यमा अंगुली पर नये तुलसी के काष्ठ से बने १०८ दाने वाले माला को फेरते है। और सामन बैठे हुए भक्तो को सांख्यशास्त्र का रहस्य तथा योगशास्त्र का रहस्य समझने की विधिबनाते है। ऐसे मेरे आराध्यि देव भगवान श्रीहरिकृष्ण की मूर्ति मेरे हृदय में सदैव याद रहे तथा मैं धारण रखू।(५)

हसितवदनचन्द्रचन्द्रिकाभिर्हृतनिजभक्तहृदन्धकारतापम् ॥
प्रकटीतजगतीसधर्मभक्तिं हृदि हरिकृष्णमहं सदा स्मरामि ॥६॥

आकाश में शीतल शांत चन्द्रमा का उदय और कुमुदिनीय का खिलाजाना ठीक उसी प्रकार मंद मुस्कान युक्त श्रीहरि के मुखचन्द्र का दर्शन करने से भक्तो के हृद यमें व्याप्क अज्ञान रुपी अंधकार तत्काल समाप्त हो जाता है। संसार में मनुष्य देह धारण करके स्वयं धर्म-भक्ति के आँगन में प्रगट हुआ है। वे भी विश्व में सद्धर्म युक्त पराभक्ति की प्रवृत्ति करने के लिये है। अर्थात् मोक्ष की ईच्छा रखन वाले मुमुक्षु धर्म युक्त भक्ति करके परमात्मा को प्राप्त करने का उपदेश देते है। ऐसे मेरे आराध्य देव भगवान श्रीहरिकृष्ण की मूर्ति मेरे हृदय में सदैव याद रहे तथा मैं धारण रखूँ।(६)

धृतिदमशमशीलसत्यशौच स्मृतिबलकीर्तितपः प्रगल्भतादयैः ॥
अपरिमितगुणयुतं च नित्यहादं हरिकृष्णमहं सदा स्मरामि ॥७॥

जिस श्रीहरि के रुप का आश्रय करके सदैव धैर्य धीरज रुप मुक, दम इन्द्रिय निग्रह शम कल्याणकारी गुण रुप शान्ति, शील वर्णाश्रम की मर्यादा पूर्वक चरित्र गुण, सत्य सदैव सत्य का सदैव आचरण, शौच बाहय और आन्तरिक शुद्धता, स्मृति मे दिये गये बचनो का स्मरण, वल, जगत की उत्पत्ति स्थइति करने की शक्ति, कीर्ति सदैव एक समान रहने की क्षमता प्रसिदिधि, बपगतभता किसी विषय का वास्तविक ज्ञान होने के का बाद भी अभिमान न होना इसी तरह कई जिसकी कोई समा नही है। जिसमें कल्याणकारी गुण जिसमें अखंड स्वरुप रहता है। ऐसे मेरे आराध्यि देव भगवान श्रीहरिकृष्ण की मूर्ति मेरे हृदय में सदैव याद रहे तथा मैं धारण रखू।(७)

परनिजमहसा जनान्समाधौ प्रकृतिपराक्षरनैज धामनिष्ठाम् ॥
जगति निज तनुं च दर्शयन्तं हृदि हरिकृष्णमहं सदा स्मरामि ॥८॥

भगवान श्रीहरि अपने शरण में आये हुए भक्तो की समाधिमें स्वयं की दित्य अविनाशी अक्षरधाम का दर्शन करके अपने अलौकिक ऐश्वर्य से अपने धाम में प्रत्यक्ष स्वागत करते है। वे कृपा करके अपना विश्वस्वरुप संसार के लोगो को प्रत्यक्ष दिखाते है। ऐसे मेरे आराध्य देव भगवान श्रीहरिकृष्ण की मूर्ति मेरे हृदय में सदैव याद रहे तथा मैं धारण रखू।(८)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुख से अमृत वचन

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

श्रीहरि संस्थापित श्री स्वामिनारायण मंदिर धोलका का १९१ वाँ पाटोत्सव अवसर, ता. ५-५-२०१८ : जो ईश्वर के लिए कार्य होना चाहिए । वह कार्य हम लोग कर रहे है । इसके ही भगवान खुश रहते है । कार्य मंदिर का है हम लोग जो सुखी है । उसका मूल कारण भगवान ही है । इसके पूर्व हमने बात की थी । उस समय आप को यह बात याद हो की न हो पुन: याद दिलाते है । एक प्रसादी का पत्र है । जो आप के अंक में छपा है । मेरे पास भी है । वर्तमान में नही है । सि पत्र में स्पष्ट उल्लेख है कि गोपालानंद स्वामी का अहमदाबाद आना हुआ । कुछ काम होने के कारण रुक गये । पत्र में समझने योग्य उल्लेख कि धोलका में जो मूर्ति है यह महाराज की प्रसादी की मूर्ति है । प्रसादी की मूर्ति कही मिलती है क्या ? सोने, प्लेटिनम या हीराजडित मिलती है लेकिन भगावन की प्रसादी मूर्ति नही मिलती है । जिस मूर्ति को महाराजने थाल रखे हो, स्पर्श किये हो, भगवान जैसे भगवान जिस मूर्ति की पूजा किये हो उसकी मिहमा तो अनन्य है । दर्शन करने की अपनी आदत है । पूर्णिमा हो अराथ्त दर्शनक रने जाना, देवं के सामने हाजिरी देकर चले जाते है । यदि महात्म सोचकर वहाँ जायेगे तो मूर्ति के सामने आनंद की अलग अनुभूति मिलती है । महाराज द्वारा प्रस्थापित या प्रतिष्ठिति किये ये देव के । इसमें स्थितं देव धातु, पत्थर या चित्र नही है । इसमें प्रत्यक्ष निवास भगवान करते है । २१३ श्लोक है ! कल्पना तो करिए जिस मूर्ति की पूजा भगवानने किया है उस मूर्ति का दर्शन से हमें लाभ मिलता है । ये बात ज्ञात है कि माँल, थियेटर या दुकान की सीढीयां चढ सकते है, लेकिन मंदिर की सीढियाँ - चढना कटिन है । ये सत्य है । है कि नही ? क्योकि मंदिर के प्रत्येक सीढी पर स्वभाव त्यागना पडता है । कही जा रहे हो तो यदि रास्ते में मंदिर आये तो पहले दर्शन कर लेना चाहिए । सायद लौटने वक्त दर्शन का अवसर मिले या न मिले ?

पाटोत्सव की पत्रिका पर मेरा ध्यान गया । धोलका मंदिर बाद में कोष्ठक में लिखा था । मुझे टेन्शन हो गया । आपकी भूल नही खोज रहा हूँ यह मुख्य नही लिखना चाहिए था । मुख्य अर्थात् क्या ? स्वामिनारायण मंदिर धोखा, दूसरा क्या ? यदी मुख्य है इसे कोष्ठक में न लिखे । जो है अपना है । दूसरा प्रसादी का मंदिर खोज लाइये । पूरे धोलका में कही है य गोपालानंद स्वामी और शुकमुनिजी के हस्ताक्षर का कागज हमारे पास है । इस लिये यही मूल है । मुख्य नही । हम सब भाग्यशाली है हमारे पास मूल मंदिर है । इन मंदिरो में महाराज की प्रसादी की मूर्तियो का हम दर्शन करते है । अपने पास जो है वह दूसरो के पास नही है इस पर गर्व करना सीखे । थोडा ध्यान दे । त्योकि आप मुझसे कहते है कि तीसरी चौथी या पाँचवी पेढी मंदिर में आयेगी । हमे भविष्य की पीढी के लिए भगवान का वातावरण देना पडेगा ।

भोजन प्रसाद लेने पहुंचे गये हो तो धीरे धीरे भोजन करियेगा । भूख लगी हो यदि जल्दी में अधिक खा ले तो परेशानी होती है । लड्डू प्रमाण में खाइयेगा । पेट चेक करके भोजन हेतु जाये । पानी को समस्या है ।

भोजन का बिगाड होता है यह हमने देखा है। लोगो को दो जून का भोजन नही मिलता है। हमें चार बार मिलता है ये भगवान की कृपा है। भोजन विगाडना नही चाहिए। पानी ने व्यर्थ करे, अन्न भी न व्यर्थ करे और बुद्धि को भी व्यर्थ न करे ! शास्त्र किस लिये है ? समय को व्यर्थ न करे कितना ध्यान देते है हमे विचार करे तो हमे पता चलेगा। औसत करे पूरे दिन में क्या-क्या किये ? जो हमे असर नही करता है ऐसे समाचार पढने-देखने में दिन के कितने समय को समाप्त कर देते है। समाचार पत्र में क्या आता है ? जिससे अपने कुछ लेना-देना नही है प्रतिदिन नया-पुराना कुछ भी पढले। कारण १० वर्ष पहले का हो या अभी का लगभग मान होता है। मर्डर, रेप, इस देश का उपदेश पर आक्रमण, दुनियाँ फट जायेगी, विपदाआ जायेगी। ऐसा ही आता है न ? मैं समय व्यर्थ नहीं करता शायद भूल से कभी हाथ में आ गया इसलिये देख लिया। यह सतयुग में भी ऐसा ही था। तब भी हवन कुंड में हड्डी डालते थे। तब शायद सीग और पूछ वाले होते थे। लेकिन आज ऐसे नहीं है मात्र इतना ही अन्तर है। समाचार आप पढे हम इसके समर्थक है इसी अच्छी तरह से पढे तो शास्त्र पढने की आवश्यकता नही पडता है। गंभीर कचरा रुपी समाचार पढने के बाद बेसना (दुखद) समाचार आता है। बोलिये शेष बाकी क्या रहा ? यह हमारी जिन्दगी है ? जब तक हम जीवित होते है लोग हमे सन्मानपूर्वक बैठाकर प्रसंसा करते है। यही लोग मरने के बाद आप की एक अस्थि का टुकडा भी घर लाना के लिये तैया रनही होते है। सभी की यह हालत है ? हम नही देख सकते ? इस लिये वर्तमान का उपयोग करे। जब कि आप सभी समय का उपयोग कर रहे है। हमारे ऋषिमुनि पंचायने को तापते ते। उनसे भी कटिन मई महीने में आपि धूप में बैठकर सुन रहे है यह बहुत कठिन है।

समाचार पत्र की बात है। एकबात मुझे अच्छी लगती है। आप सुने होगे पिर भी कहता हूँ। एक गाँव मे धनकन मुखिया रहते थे। उनके घर के दिवाल के साथ चबूतरा था। पहले ऐसे चबूतरा होते ते। उपर छाया रहती थी। गाँव के लोग खाली समय में यहाँ पर बैठते थे और बात करते थे। वर्तमान में ये चबूतरे कम हो गये है। चबूतरे पर एक पागल भी बैठता था। गाँव में एक पादो व्यक्ति संयोगवश पागल हो ही जाते थे। कैसा भी हो कह सकते है कि पागल ही ता। और वैसे देखे तो इस संसार में कौन स्वस्थ और चतुर है ? अपनी और आप की सभी की बात करे तो इससे पहले स्वयं को देखना चाहिए ? महाराजी कहते है कि स्वयं की आत्मा के कल्याण हेतु निर्णय किया हो। उसे क्या करना चाहिए ? क्या कर रहा है ? ये विचारवाला चतुर है। शेष संसार में कितना भी व्यवहार करे उसे समझदार कहे ये भ्रम है। पागल आदमी प्रतिदिन सेठ के चबूतरे पर आखर बैठता था। सेठ का दस या ग्यारहबजे समाचार पत्र पस्ती (भंगार) हो जाने पर पेपर शांति से पढकर चला जाता था। शेठ से पानी, पैसा, और भोजन नही माँगता था। इसके बाद सेठ का लडका अब गया था। वह एक-दो वर्ष पुराना भंगार से समाचार पत्र देता था। वह पढकर चला जाता था। सेठ सज्जन थे। दया आने पर जाकर पागल व्यक्ति से बोले भाई मुझे माफ करना। मेरा पुत्र आप को मस्ती में पुराना समाचार पत्र देता है। मैं उससे कह दिया हूँ कि आप को प्रतिदिन नये समाचार पत्र दे दिया करे। तब पागल ने सेठ से कहा यह समझने वाली बात है। सुनो ! लोग मुझे पागल कहते है। कोई बात नही, क्या प्रभाव पडता है ? समाचार पत्र आज का हो या छ महीने पहले का हो वस्तु तो वही रहती है। केवल तारीख बदल जाती है। समाचार पत्र बदल जाये लेकिन अंदर समाचार नही बदलता है। वास्तव में आप देखे वर्ष बदलने पर आपस में सभी हैपी न्यू ईयर (नूतन वर्षाभिनन्दन) करके अभिवानद कता है। वर्ष बदला समय वही तो वही रहता है। रात्रि बीत जाने पर प्रातः होती है। तारीख बदल जाती है प्रातः वही है ! अर्थात् अपना नाम रखना। बीते पाटोत्सव का कैसा दर्शन किये थे। कैसे दर्शन करना चाहिए। इस तरह हम स्वयं जज बने। दूसरे का जज बनने का अधिकार महे नही है। किसी को न्याय भी नही दे सकते है। आप को मिला

दिन, घंटा, मिनट का सदुपयोग करे यह मेरा व्यक्तिगत ख्याल है।

मेरे पास वडताल की पुस्तक है। इस पुस्तक में महाराजने जो धोलका में प्रतिष्ठा किये थे । उसका विवरण स्वयं विहारी लालजी महाराजश्रीने किया है। भुज में हमको पता चला तब सभा में इसका वाचन कराये थे। किसने कब निकाला उस चर्चा में हमे नही जाना है। लेकिन नव मंदिरो में इसको कम हम नही करना चाहते है। ये देव हमारे लिये सर्वोच्च है। देव का दर्शन हो स्पर्श हो तथा उत्सव में संत-भक्तो का दर्शन हो इस उद्देश्य से आया हूँ।

सफाई हो अच्छी बात है। लेकिन सफाई के बाद उसका मेइटिनेन्स अधिक महत्वपूर्ण है। अभी हमने कहा था कि आठ बेड रुप का घर बने। अधिक जगहवाला हो और कही पर डस्टबिन रखने की जगह न हो तो क्या होगा ? यहाँ-यहाँ कचरा फेके तो किसकी गलती है। कहाँ थूकना है ? कहाँ नही थूकना है ? महाराजजी हमे तो सिखायेगे नही। स्वच्छा और मेइटेनेन्स अपना धर्मकर्म है। मैं अपने बाथरुप की स्वयं सफाई करता हूँ। इसके वहाँ छोटापन है ? आपभी स्वच्छ रखे। दूसरे के उपर मंदिर को नही चोडे। पुनः अपने को ही बाथरुम जाना है। ये बात शास्त्र से बाहर नही है। स्वच्छता का कार्य इस मास से शुरु कर दे। भगवान के उपर विश्वास हो तो सभी शुभ योग है ? हमने तो कमूरता में भगवान का नाम लेकर प्रतिष्ठा की है। इसके बाद भी मंदिर अच्छे रुप से चल रहा है। लोग मुहूर्त देखकर मर गये आज वे मंदिर बंद पड गे है। मुहूर्त अपने लिये होता है। भगवान के लिये नही होता है। अडोस पडोस और सगा सम्बन्धियो को मना ले। ये लोग करीबी है। परेशानी कर सकते है। शेष शनि, रवि, सोम तो बहुत दूर है। हमे परेशान करने के लिये खाली नही है। महाराज पर पूर्ण विश्वास होगा तो कोई परेशान नही करेगा ? मैं तो हमेशा करता हूँ कि भगवान को छोडने पर सभी परेशान करेगे। स्वयं से लेकर समस्त जगत परेशान करेगे। मंदिर आते रहियेगा इस देव की सेवा महाराज ने स्वयं किये है। ऐसा सोच कर दर्शन करियेगा। इतना कहकर सभी को प्रेम भरा आशीर्वाद प्रेषित किये थे।

समस्त सत्संग हेतु

जयश्री स्वामिनारायण के साथ अवगत करना है कि

श्री नरनारायणदेव देश के प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा भविष्य के आचार्य महाराजश्री के शुभ आशीर्वाद तथा फोटोग्राफ तथा आमंत्रण पत्रिका आदि साहित्य छापने से पहले श्री नरनारायणदेव कोठार आफिस अथवा कार्यकारिणी की अनुमति लेना अति आवश्यक है।

उपरोक्त अनुमति के अलावा प्रकाशित किया जायेगा तो उनके उपर नियमानुसार कार्यवाही की जायेगी। इस पर विशेष ध्यान दे।

विशेष अनुमति के बिना किसी भी अवसर की आमंत्रण पत्रिका छापेगा तो उसमें कोई भी सत्संगी भाई-बहन नहीं जायेगा इसका विशेष ध्यान दे।

अर्वाचीन गुजराती भाषा में उपरोक्त पत्र

- प्रो. हितेन्द्रबाई नारणभाई पटेल (अहमदाबाद)

अक्षर सह पत्र:

नरनारायणदेव देश के गद्दी के आचार्यश्री पाण्डेय अयोध्याप्रसादजी हरिकृष्ण महाराज सर्वस्थल, मूली वासी श्री राधाकृष्णजी का मंदिर..... ली । साधु ब्रह्मानजी तथा महानुभावानंदजी.... पूर्णानंदजी तता भूमानंद तता सर्वज्ञानंद तथा कृष्णानंद तथा दूसरे पूर्णानंद तथा देवानंद..... तथा गुरुचरणारतानं.... आदि महंत तथा महारे मंडल के के साधु.... सहजानंदजी महाराज के तथा ब्रह्मचारी वासुदेवानंद तथा राघवानंद तथा घनश्यामानंद तता वामनानंद आदि ब्रह्मचारी मंडल समस्त श्री सहजानंदजी महाराज के प्रति ये लेख हम अपने राजी खुशी से अकल होशियारी से श्री मुली के मध्य श्री राधाकृष्ण महारजा की प्रतिष्ठा के समैया के मध्य करके दे रहे है..... हम सभी महंत मंडल तथा सभी हम.... हमारी मंडली के सभी साधु सभी के पास से..... सहजानंदजी महाराज के चरणारविंद वस्त्र उपर तथा कागज के उपर ..... महाराज को दिये गये ..... की चाखडी तथा महाराज के अंग की प्रसादी वस्त्र तथा पुस्तके इत्यादि सभी जो.... है वे सभी आप की है मेरा कोई हक नही मेरी आज्ञा से उपर लिखी वस्तुए..... पूजा पुस्तक इत्यादि ..... में कोई साधु अथवा ब्रह्मचारी शिक्षापत्री का उल्लंधन करे आप की आज्ञा बंग करे.... तो उसके पास से उपर लिखी पूजादि पुस्तक सामान.... उपर कोई दावा-प्रतिदावा नही अथवा कोई पूर्वाश्रम में..... लिखा हुआ सामान उनके वो आप को देकर ..... वे उपर ज्ञात कोई..... साधु या ब्रह्मचारी धर्म सहित शरीर रखे उसेक पूजा का सामान हो तो पूर्वाश्रम में संबंधी का अधिकार नही वो आप ले. पूर्वाश्रम में जानेरा पहनना ..... तथा पछेडी १ ये भी ले करजाये ।

हम मध्य के ब्रह्मचारी को.... उपर..... प्रमाण के साथ रहना तथा उपर के हिसाब से चलना.... धरम के साथ लक्ष्मीनारायण के देश में जाने को कहे तो स्वय .....

विवरण :

सम्प्रदाय के धर्मवंशी आचार्यश्री पर सम्पूर्णरुप से समर्पित भाव दिखाते हुए यह पत्र मूली धाम के संतो ब्रह्मचारीयो द्वारा लिखाग या है । अत्यधिक प्राचीन होने के कारण कई शब्द ज्ञात नही हुए है अथवा फट गया है । इस कारण से ये जगह खाली रखी गई है ।

मूलीधाम के आदि महंत और सम्प्रदाय के विद्वान संत शिरोमणी स.गु. ब्रह्मानंदजी तथा अन्य संतो और निष्ठावान ब्रह्मचारी सहित महानुभावो संतोने अपने संकल्पो के भावो कागज पर लिखकर तत्कालीन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री को सम्बोधित करके यह पत्र लिखे है । मूली मंदिर में राधाकृष्णदेव की प्रतिष्ठा उत्सव में ही यह सद्गुरु संतोने आचार्यश्री को अर्पण किये थे ऐसा ज्ञात होता है ।

कोई भी मुमुक्षुजन जब भी संत दीक्षा या ब्रह्मचारी की दीक्षा लेता है तब दीक्षा उस सम्प्रदाय के धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री ही दे सकते है । इस कारण से गृहत्यामी सर्व गुण से स्थापित श्रीजी महाराजने किया है । संत दीक्षा लेकर धन और स्त्री के आठ प्रकार का त्याग करता है । और भगवत भजन के साथ समजा सुधारक प्रवृत्तियों में अपने को रत रखता है ।

इन संतो का धन-वैभव मात्र भगवान की मूर्ति है । संचार व्यवहार की धन, जमीन, बाग इत्यादि धूल के समान है । सभी संत मंडल की मात्र एकवृत्ति होती है । श्रीजी महाराज के आज्ञा के बाहर व्यवहार न करें । वचन के द्वारा संत गृहस्थो को धन, बच्चे, बच्चियाँ दे सकते थे, ऐसे सार्मथ वाले संत अपने पास मात्र श्रीजी महाराज के चरणारविंद और पूजा के सामान रखते थे । इसके अलावा कुछ भी नही । ब्रह्मानंद संत वाणी से ब्रह्मांड धुमा सकते ये ऐसे समर्थ शक्ति थे । अरे !

भगवान की देह रखने के बाद भी भी वापस ला सकते थे । इसके बाद भी उनकी सरलता देखे, उनकी सभी पूँजी पूजा-पुस्तक चरणारविंद इत्यादि शरीर त्यागने के बाद धर्मवंशी आचार्यश्री के चरणो में रख दिये । अपने सेवको-शिष्यो को देने की लालच भी नही किये । इसी विषय पर स्वामिनारायण के संतोने अन्य लोको की अपेक्षा खरे उतरे है । आज नैतिक मार्ग पर चलकर आज भी कई संत अपने पास की प्रसादी, वस्तु सामने से आकर प.पू.ध.धु. निवृत आचार्यश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री को समर्पित करके महाराजश्री उन सभी को हरिभक्तो के दर्शन के लिये स्वामिनारायण म्युजियम में रखवा देते है । सच्चे संतो के धर्मवंशी आचार्यश्री के प्रति समर्पित शिष्य भाव ही सम्प्रदाय को उज्जवल करता है ।

पत्र में स्पष्ट लिखते हुए ब्रह्मानंद आदि संत बताते है कि कभी संयोवस कोई सन्यास आश्रम से गृहस्थ आश्रम की तरफ आये तब भी अपने साथ पहनने के लिये मात्र दो कपडे के सिवाय कुछ भी नही ले जाता था । तथा ये बताते है कि यदि संत ब्रह्मचारी शरीर का त्याग करे, तब पूजा के सामान और वस्तुए आचार्यश्री को देते थे । उनके पूर्व आश्रम के सगे सम्बन्धी भी सम्पत्ति में अधिकार नही था ।

आज की भाषा में जिसे हम विल अथवा वसियतनाम् । कहते है । उस आधार सम्पत्ति की व्यवस्था की सूचना नंद संतो की महानता देखे वे लोग व्यवस्था में पडे ही नहीं उन्होने एक ही पंक्ति में वसियनामा किया कि, सबकुछ आचार्यश्री को अर्पित है । इस समझदारो को लाखो बार प्रणाम करे तो भी कम है । हमारे पास जो कुछ है देव ने दिया है, देव अर्थ प्रयोग करके शरीर त्याग कर देव समान आचार्यश्री को देने में समझदारी है । गृहस्थ हरिभक्त भी यह समझे निर्लिप्त रहकर व्यवहार करें लेकिन उसमें बंधे न रहें ।

इस पत्र के लिखावट कर समय मूली मंदिर में राधाकृष्णदेव की प्रतिष्ठा समैया का है । अर्थात् जब देव साक्षातरुप में अपने यहाँ विराजमन होते है तब हम अपना सब कुछ देव के चरणो में रखे तथा व्यवहार की प्रमुखता को छोडकर आज्ञा का पालन करे । अपने बडे संतो का अपने शिष्यो के प्रति भी इतना विश्वास लगाव था कि वे सभी शिष्य मंडल कभी भी इस पत्र में लिखे वचनो का उल्लंधन नही किये । यह शरीर मिल्कत इकट्ठा करने के लिये नही प्राप्त किये है । अपने जीवन का कल्याण करने तथा श्रीजी महाराज की आज्ञा के अंदर रहकर व्यवहार करने हेतु है । यह संतो का अनुभव है जिन्होने श्रीजी महाराज को वर्षो तक प्रत्यक्ष रुप से सेवा दिये है और बाद में वे ही धर्मवंशी आचार्य की आज्ञा में बिताये है ।

आज के युग में ये अतिशय गहरी समझ वाला ये पत्र, मात्र कागज ही नही बल्कि बचन पत्र है । गेरुआवस्त धारियो प्रदत्त आचार्यश्री को यह प्रतिज्ञा पत्र है । उनके द्वारा दी गई समाज को उच्च समझ और ज्ञान के प्रति समर्पित पंक्ति है । मुमुक्षु हरिभक्तो को आज्ञा का पालन करने से बल मिले ऐसी उच्च भावना से सभी लोगो के हित हेतु यह पत्र प्रकाशित किया गया है । इस की मूल प्रतिलिपि श्री स्वामिनारायण म्युजियम होल नं. ११ में रखी गयी है । सभी हरिभक्त भाव पूर्वक उसका दर्शन करके उन्तरमन में उतारने का पूर्ण प्रयास करें ।

आभार सहित स्वीकार

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. १००८ आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा से शास्त्री स्वामीश्री हरिकेशनवदासजी के कमल द्वारा लिखे शास्त्रो के सन्दर्भ के साथ भाववाही शैली में लिखे आराध्य देव श्रीहरि के वन विचरण की कथा की पुस्तक का सुंदर प्रकाशन हुआ है ।

-: प्राप्ति स्थल :-

श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद - साहित्य केन्द्र

श्री स्वामिनारायण मंदिर सेक्टर-२३, गांधीनगर

શ્રી કપિશ્વરધામ શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર મકનસરમાં મૂર્તિપ્રતિષ્ઠા મહોત્સવ

મૂર્તિ પ્રતિષ્ઠા

મૂર્તિ પ્રતિષ્ઠા

અન્નકૂટ

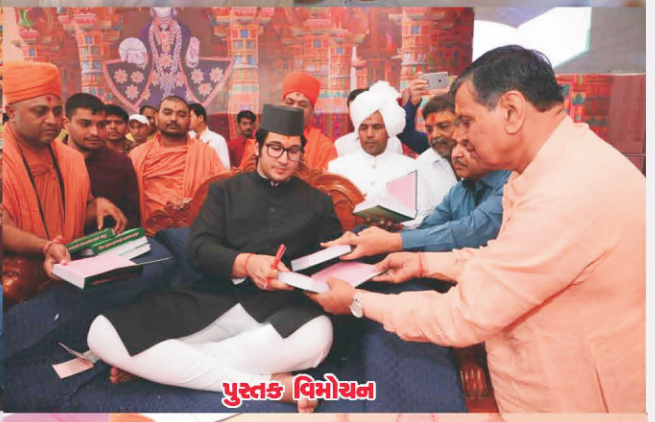
પુસ્તક વિમોચન

ઉદ્ઘાટન

દિપ પ્રાગટ્ય

પુષ્પ ષોડોપચાર

યજ્ઞ આહુતિ

શ્રી મહાવિષ્ણુયાગ

શ્રી મહાવિષ્ણુયાગ

શ્રી મહાવિષ્ણુયાગ

સાંસ્કૃતિક કાર્યક્રમ

મંદિર ઉપર લાઈટીંગ

રક્તદાન શિબિર

મહાપ્રસાદ

મંદિરની સમૂહ આરતી

પ.પૂ.લાલજી મહારાજશ્રીનું સમૂહ પૂજન

આશીર્વચન

સંતો દ્વારા મહંત સ્વામીનું સન્માન

વ્યાખ્યાનમાળાના વક્તાશ્રીઓ

વ્યાખ્યાનમાળાના વક્તાશ્રીઓ

કથાપાન કરાવતા વક્તાશ્રી તથા કથાપાન કરતા સંતો હરિભક્તો

૧. શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર કાલુપુરમાં નારણપુરા મંદિર રજત જયંતી મહોત્સવના ઉપલક્ષમાં આયોજીત ૧૨ કલાકની અખંડ ધૂન કરતા સંત-હરિભક્તો. ૨. ગાંધીનગર (સે.૨) મંદિરના ૨૧માં પાટોત્સવ પ્રસંગે સભામાં પ.પૂ.લાલજી મહારાજશ્રીનું પૂજન કરતા યજમાન પરિવાર તથા ઠાકોરજીનો અભિષેક કરતા પૂ.સંતો.

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

श्री स्वामिनारायण म्युजियम

श्री स्वामिनारायण म्यूजियम यज्ञ मंडप

- शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(अहमदाबाद)

अपने हिन्दु धर्म में यज्ञ का महत्व अधिक है। और उसमें से मानव जीवन को प्राप्त होने वाले अनेक प्रकार के दिव्य और भौतिक लाभ की विशेष विशेषता है। जिसाक वर्णन सत्य शास्त्रो में विस्तारपूर्वक किया गया है। श्रीमद् भगवद्गीताजी में स्वयं भगवान श्रीकृष्ण कहते है कि - यज्ञनां जप यज्ञो अहमस्मि। अनेक प्रकार के जो यज्ञ है उसमें से जपयज्ञ मैं हूँ। जिस कारण से सर्ववतारी भगवान श्री स्वामिनारायण अपने जीवन काल मैं सतत यज्ञ किये थे। जेतलपुर और डभाण में बड़े यज्ञ करने के बाद जहाँ जहाँ विचरण करते थे वहाँ पर किसी न किसी प्रकार के यज्ञ अवश्य कराते थे। महा मंदिरो की प्राण प्रतिष्ठा का यज्ञ ही क्यो न हो। इस लिये पाँच सौ परमहंसो मे स.गु. अखडानंद वर्णी स्वामिनारायण भगवान के स्वरुप का इस तरह वर्णन किये है। येज्ञेड्य यज्ञ हृदयमार यज्ञतंतो यज्ञेश यज्ञफलदोत्तम यज्ञ कर्ता । यज्ञेज्य यज्ञ विधिसंशय यज्ञमूर्ति कृष्णं नमामि सततं अवतारिणं त्वम् ॥९॥

अर्थात् जिसकी उपासना यज्ञ से होती है। जिस के हृदय कमल में अमर स्वरुप में यज्ञ बसा हुआ है। जो यज्ञो से बीने हुए है। और यज्ञो के ईश्वर अर्थात् नियंता स्वामी है। यज्ञ का उत्तम फल जो मोक्ष को प्रदानक रने वाला होता है। स्वयं यज्ञ करने वाले है। यज्ञ ही जिसकी पूजा है। वैदिक यज्ञ की विधि-विधान को जो हमेशा प्रशंसा करते है। स्वयं यज्ञ मूर्ति है। ऐसे हमारे ईष्टदेव सर्वावतारी जिसको मार्कण्डेय मुनिने कृष्ण जैसा नाम दिये है। भगवान श्री स्वामिनारायण को मैं हमेशा प्रणाम और नमन करता हूँ।

श्री स्वामिनारायण म्यूजियम प.पू. बड़े महाराजश्री का दिव्य शुभ संकल्प साकार हुआ है। और जहाँ पर श्रीहरि की दिव्य-अद्भूत याद देने वाली उनेक अंगभूत प्रसादी की असंख्य वस्तुओ का संग्रह है। वे अति पवित्र महान प्रसादी की भूमि उपर भी श्रीहरि द्वारा प्रवर्तित के ही स्वरुप जैसे यज्ञ की प्रवृत्ति सदैव चालु रहे ऐसे पू. बड़े महाराजश्री के शुभ संकल्प से यज्ञ मंडप का निर्माण शुरु हुआ है। जिसका साकार रुप का वर्तमान समय में दर्शन होता है। उसके बारे में थोडा विचार करे।

अति पवित्र और श्रीजी महाराज के अंग स्पर्श से पवित्र हुए वस्तुये, जहाँ पर ऐसा दुर्लभ दर्शन होता है।

વહાઁ હી અતિ પવિત્ર ઔર વૈદિક શાસ્ત્રાનુસાર ઔર શિલ્પશાસ્ત્ર વાસ્તુ વાસ્ત્ર કી નિર્માણ કલા કે અનુસાર યજ્ઞ મંડપ કે નિર્માણ કરને કે લિએ વૈસી હી પવિત્ર ઔર શ્રીહરિ કે અંગ સ્પર્શ સે પવિત્ર હુઈ સામગ્રી ઇકટ્ઠા કરકે સુદંર કલાત્મક મંડપ કા નિર્માણ કિયા ગયા હૈ। ઉસે દેખે।

(૧) યજ્ઞ મંડપ કા મુખ્ય પ્રવેશ દ્વાર : જહાઁ પર યજ્ઞ કે રક્ષક દ્વારપાલ પૈરો પર ખડે ઉપસ્થિત રહતે હૈ। ઉસ મુખ્ય દ્વાર શ્રી સ્વામિનારાયણ ભગવાન કે વિશ્વ મેં સર્વપ્રથમ સ્વયં કા મહા મંદિર કા નિર્માણ અહમદાબાદ શહર મેં શુરુ કિયે। તબ અંગ્રેજ સરકાર કે દ્વારા દી ગયી પહલી જમીન કા એક ભાગ થા। વહાઁ પર બીચ મેં લોગો કે આને-જાને કા રાસ્તા થા। વે લોગ મંદિર બનને કે બાદ ભી બીચ સે રાસ્તે પર ચલને કે લિએ અંગ્રેજી કોર્ટ મેં દાવા કિયે થે। તબ કોર્ટને નિર્ણય દિયા કિ જબ મંદિર મેં દર્શન કે સમય લોગો કો આને-જાને દેના હૈ ઇસ કારણ સે દરવાજા કે સામને બગલ મેં છોટી ખિડકી રખી ગયી હૈ। ઇસ કાર્ય કી કાર્યવાહી કે લિએ અહમદાબાદ કે અગ્રણી હરિભક્ત કુબેરદાસભાઈ છડીદાર કો શ્રી સ્વામિનારાયણ ભગવાન ને અપના પાવર ઓપ એટર્ની દિયે। ઉસ પ્રસાદી કી ખિડકી કા ઉલ્લેખ શ્રી સ્વામિનારાયણ ભગવાન કે હસ્તાક્ષર વાલે પત્ર સે હુઆ થા। વહ દરવાજા યજ્ઞ મંડપ કે મુખ્ય દ્વાર કે ઉપર રખા ગયા હૈ।

(૨) યજ્ઞ મંડપ કી સુરભા કવ્વ જાલી : ઇસ સામગ્રી કો ઔર યજ્ઞકુંડ કોઈ ભી કિસી પ્રકાર સે અપવિત્ર કરે ઇસ કારણ સે સુરક્ષા વ્યવસ્થા કરના પડતા હૈ। ઇસકો દેખતે હુએ ચારો તરફ જાલી કા નિર્માણ કિયા ગયા। વહ જાલી આનન્દાનંદ સ્વામી ને શ્રી નરનારાયણદેવ કે મંદિર કી સુરક્ષા કે લિયે નિર્માણ કિયા ગયા હૈ। જો મંદિર કી કોલી કહી જાતી હૈ। વહાઁ પર શ્રી નરનારાયણદેવ કી દૃષ્ટિ કે સન્મુખ ૧૯૨ વર્ષ તક થી ઉસે યહાઁ લિખા ગયા હૈ।

(૩) યજ્ઞ કે ધુએ કો વહન કરને વાલા ગવાક્ષ : અનેક પ્રકાર કી સમિધાઓ સે જબ હવન કુંડ કી આહુતિ દી જાતી હૈ। તબ જો ધુઆઁ પૈદા હોતા હૈ। ઉસકો આકાશ તી તરફ પ્રેરિત કરને કે લિએ જો ખિડકી રખી જાતી હૈ ઉસે ગવાક્ષ કહતે હૈ। વહ બારી ગવાક્ષ શ્રી સ્વામિનારાયણ ભગવાન જબ ભી અહમદાબાદ મેં આતે થે। તબ રંગ મહલ મેં રહતે થે। જિસે હમ લોગ વર્તમાન મેં દર્શન કરતે હૈ। ઉસ રંગમહલ કે ઉપરી ભાગ મેં શ્રીહરિ લેટતે થે। વહાઁ પર બૈઠકર ભક્તો કો દર્શન દેતે થે। ઉસ ચોટી ખિડકી મેં અર્થાવ ગવાક્ષ યા। ઉસી ગવાક્ષ કો યજ્ઞ મંડપ કે ઉપરી ભાગ મેં સ્થાપિત કિયે ગયે હૈ।

પ.પૂ.ધ.ધુ.આચાર્ય ૧૦૦૮ શ્રી કોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીની આજ્ઞાથી તથા પ.પૂ. મોટા મહારાજશ્રીની પ્રેરણા-માર્ગદર્શનથી બનેલા શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમમાં આકાર પામેલ શ્રી નરનારાયણદેવ યજ્ઞશાળા યથાશાસ્ત્ર ષોડશ (૧૬) સ્તંભને ૨૭ x૨૭ પૂર્ણાંક યુક્ત તેમજ પ્રતિસ્તંભ નવ-નવ ફૂટનાં અંતર અને મધ્યમાં યજ્ઞ આધાર બ્રહ્મસ્થાને સંપૂર્ણ શાસ્ત્રવિધિ અનુરૂપ કૂંડવાળી સકળપીઠોથી સુસજ્જ બનાવેલછે. જેમાં પ્રથમ યજ્ઞ તા. ૨૩-૧૨-૨૦૧૮ રોજ ધામધૂમથી સંપન્ન થયો. મ્યુઝિયમમાં શ્રી મહાવિષ્ણુયાગ યજ્ઞ નોંધાવવા શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમની ઓફિસમાં મળવું.

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि-डिसम्बर-१८

रु। २५,०००/- भीमजीभाई देवजीभाई टांक - बोडको
रु। ९,६००/- अ.नि. जसवंतभाई अमुलखभाई दोशी - नारणपुरा - ह. जयेशभाई दोशी
रु। ५,००१/- प्रफुलकुमार धनजीभाई गेलाणी - नवा नरोडा
रु। ५,०००/- पटेल पोपटभाई सोमाभाई वावोल हाल में राणीप पौत्र जय को कनाडा का विजा मिला इस खुशी में
रु। ५,०००/- माधव जीग्नेशभाई आद्रोजा - मोरबी - हक्षर संदीपभाई आद्रोजा श्रीजी के प्रस्त्रार्थे
रु। ५,०००/- महेन्द्रभाई नानालाल देसाई - वडोदरा
रु। ५,०००/- मीनाबेन के. जोषी - बोपल

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति का अभिषेक कराने वालों की नामावलि डिसम्बर-१८

दि. ०२-०१-२०१९ निरवभाई मिस्त्री, सायंस सीटी - श्री सुनिलभाई मिस्त्री, वर्तमान देव राजेशभाई मिस्त्री
दि. ०५-०१-२०१९ अ.नि. भनुभाई नानजीभाई सुहागिया - यु.एस.ए. वर्तमान में सुखदेव तथा वासुदेव एवम् चंपाबेन
दि. ०९-०१-२०१९ श्री अश्विनभाई मगनभाई जागाणी - अम्बावाडी
दि. १२-०१-२०१९ धीरजभाई हालाई - मोम्बासा
दि. १५-०१-२०१९ जैनिल भरतभाई पटेल - हिलोद्रावाला वर्तमान विठ्ठलभाई शिवरामभाई पटेल
दि. १६-०१-२०१९ अ.नि. घनश्यामभाई जयेशभाई सोनी के याद में ह. जयेशभाई छगनभाई सोनी - नडियाद
दि. २२-०१-२०१९ पटेल योगेशभाई वाडीभाई कुंडालवाले वर्तमान में यु.एस.ए.
दि. २३-०१-२०१९ (प्रातः) अ.नि. बाबूलाल मणीलाल शाह १०० वर्ष हुए इस उपलक्ष्य में ह. शरदभाई - प्रांतिज
(शायं) श्री स्वामिनारायण मंदिर - दरबारगढ (बहनो का) मोरबी - ह. सां.यो. राजकुंवरबा तथा उषाबा
दि. २७-०१-२०१९ दक्षेसभाई प्रेसिडेन्ट स्वा. मंदिर एटलान्टा
दि. २९-०१-२०१९ घनश्यामभाई शंकरभाई बेचरभाई पटेल - मोखासण
दि. ३०-०१-२०१९ अ.नि. बाबुलाल मगनलाल सोनी - सरखेज,
अ.नि. हंसाबेन बाबुलाल सोनी- सरावाला
अ.नि. राजेशभाई बाबुलाल सोनी सह परिवार

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री महाविष्णुयाग यज्ञ की सूची दिसम्बर-२०१८

दि. २३-०१-२०१९ (प्रथम यज्ञ) सोनी चुनीलाल दुर्लभजी - ह. सोनी जयेन्द्रभाई चुनीलाल (पलियाडवाला)

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

सत्संग आख्यायिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

सेवा करिये, सुखी रहिए

– शास्त्री हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

अहो ! आश्चर्य । अजब-गजबी की बात ! ऐसा सुना भी नही, तो देखेगगे कहाँ से ? एक बैल की आत्मा को प्रभु स्वयं अपने धाम ले गये, ''नही देखान ही सुना'' प्रगट हो ऐसी पुनीत पुरुषोत्तम आये'' बात सत्य है । जरा शांति से पढिये गा ।

नर्मदा नदी के किनारे वाले क्षेत्र जिसे कानम क्षेत्र कहते है । उसी कानम क्षेत्र में इटोला गाँव । इटोला गाँव के जीवीभाई पाटीदार सत्संगी अच्छे थे । किसी व्यक्ति ने ऐसा समाचार दिया कि आप के साधु तवरा के मेले में गये थे । नमर्दा में बाढ आ जाने के कारण परेशानी में आ गये है । हरिगुण गान कर रहे है । दो दिन से भूखे प्यासे है । मनुष्य चले गये है केवल संत बच गये है ।

मुक्तानंद स्वामी जैसे संत की तकलीफ की बात सुनकर जीवीभाई अपने को रोक नही पाये । जीजीभाई को ऐसा लगा यह कैसे चलेगा ? हमारे घर में अनाज भरा पड़ा है । और हमारे साधु भूखे रहे ये कैसे होगा । और खीचडी की थैली तैयार किये । तपेला रखे और इक्का तैयार किये । इक्का अर्थात् एक बैल को जोडकर छोटा गतिमय साधन होता है । जीवीभाई बैलको हाँकते-हाँकते नर्मदा किनारे आये । वहाँ पर अंगीठी भाडा पर लिये, तपेला खीचडी सब रखकर नर्मदा के किनारे आये ।

संतो के पास जाकर चरण स्पर्श किये । दो दिन का पूर्ण उपवास हुआ था । कुछ भी नही मिला था । वहाँ जाकर सभी तैयार किये । तपेला चढाये । आधे घंटे में खिचडी तैयार हो गयी । ठाकुरजी को भोग लगाये बाद में स्वामिनारायण-स्वामिनारायण का स्मरण करते हुए खीचडी परोसे । संत लोग खुश हुए । जीजीभाई आपने अच्छी सेवा दी है । संत लोग पानी निकल जाने के बाद आगे बढे ।

जीजीभाई के लिये यह अवसर जीवन में महत्वपूर्ण हो गया । क्योकि जीजीभाई सत्संगी थे । सेवा करते थे । उनके घर पर रहने वाले बैल के लिये ये घटना अजब-गजब बात कर गई । जीजीभाईं की उम्र तप ७० वर्ष की हुई तो, स्वामिनारायण भगवान उन्हे अपने धाम मैले जाने के लिये आये । जीजीभाई के पडोस में एक हरिभक्ति रहते थे उनको दर्शन दिये । महाराज ! आप रात्रि के बेला में । हाँ जीजीभाई की उम्र पूरी हो गई है । इस लिये इन्हे अक्षरधाम ले जाने के लिये आये है । महाराज ! दया करें । जीजीभाई तो सर्वाधिक सत्संगी बात करते है । आप के चरित्र की बात करते है । निश्चय की बात करते है । इस लिये इन्हे यही रहने दे । अभी न ले जाये । महाराज यहाँ इनकी अधिक आवश्यता है । यदि अभी जीजीभाई को धाम में ले जायेगे तो इस गाँव में सत्संग की प्रेरणा देने वाला कोई नही है । महाराज बोले, ऐसा है ? तो अच्छा आपकी ईच्छा है तो जीजीभाई को रहने देते है । और इनके आँगन में बंधा हुआ बैल है । इसकी आत्मा को धाम में ले जाउगा । और महाराज जीजीभाई के बैल की आत्मा को अपने धाम ले गये ।

उस समय रात्रि के दो या ढाई बजे थे । अर्थात् तीसरा प्रहर चल रहा था । और हरिभक्तने जीजीभाई का दरवाजा खटखटाया । जीजीभाई जय स्वामिनारायण जीजीभाई उठ गये । दरवाजा खोले । क्यो इस समय दरवाजा खटखटाये । कोई कष्ट है क्या ? नही आप मेरे साथ पीछेवाडा में चलिये बाद में बात करेगें । दोनो भक्त बाडे में गये । देखे तो बैल मरा पडा था । इस हरिभक्तने जीजीभाई से सभी बात को बताया । आप के इस बैल की आत्मा भगवान के धाम में गई है । महाराज मुझे दर्शन देकर कह गये कि में इस बैल की आत्मा को ले जायेगे क्योंकि यह संत की सेवा में लगा था ।

मित्रो ! भगवान का प्रताप तो देखे ! भूखे संतो को अनाज ले जाने के कारण इसकी आत्मा को भगवान निजधाम में ले गये । इस प्राणी की आत्मा को धाम में ले गये सेवा का कितना प्रताप और महिमा है !!!

तप करने से वासना नही जाती, तप करने से जीव निर्वासनिक नही होता है । लेकिन सेवा करने से होता है । यह बात वचनामृत में स्वामिनारायण भगवान उका खाचर के दृष्टांत से कहते है । शिक्षापत्री में भगवान ने सिक्का ही लगा देया है । ''सेवा मुक्तिरच गम्यताम्'' इसलिये सत्संग में कही पर

भी सेवा का अवर मिले तो नि:स्वार्थ से करने से देव, आचार्य, संत, सत्संगी की सेवा करे और सुखी बने।

●

लालच की बातें

- नारायण वी. जानी (गांधीनगर)

आज तो अवकाश का दिन है। अवकाश अर्थात् आनंद। बच्चे अवकाश के दिन खेल खेलते है। कहानी पढते है। कुछ अध्ययन भी करते है। इससे अवकाश का दिन आराम से व्यतीत हो जाता है। महेश और उसके मित्र महेश के घर पर कहानी पढ रहे थे। उसमें आया कि ''अधिक लालच पाप की जड होती है।'' इस में महेश को खराबी दिखाई दी। उसने दादाजी से पूछा दादाजी ! इसे क्या कहेगे ? हमे समझाये। दादाजी बोले, तुम मेरे पास बैठो। मैं तुम्हे अच्छे उदाहरण से समझाता हूँ।

दक्षिण भारत के किसी शहर में एक व्यापरीय वह सुखी था फिर भी लालची था। पूरी जीवन धन एकत्र करने में बिता दिया। इसके बाद भी उसको संतोष नही था। पैसा कमाने का कोई भी अवसर युक्ति छोड़ता नही था। ऐसे में कोई महात्मा उसके गाँव में आये। काफी लोग दर्शन किये। लेकिन यह व्यापारी दर्शन के लिये नही जाता था। क्योकि जाने पर दक्षिणा देना पडता। यह कैसे करता ! पत्नी के काफी आग्रह पर जाने के लिये तैयार हो गया।

दर्शन करने का समय रात्रि का रखा ताकि सभी भक्त अपने धर चले गये ही। तब दर्शन करने गया। गरीब न होते हुए भी गरीब का नाटक करके विनती करने लगा। ''महात्माजी ! सब आप की सेवा करते है। मैं गरीब होने के कारण कोई भेट नही ला सका हूँ। इस कारण धन थी जगह पर तन से सेवा कर रहा हूँ। यह कर महात्मा का पैर दबाने लगा। महात्माजी सेवा से खुश होकर गरीबी दूर करने के लिये एक गोली दिये। और बोले ''इस गोली से तुम अमीर हो जाओगे।'' कल रात्रि में यहाँ से उत्तर दिशा में थोडी दूर पर एक कुँआ है। वहाँ पर जाकर यह गोली खा लेना इससे सरलता से कुए में चले जाओगे। उस कुए में अपार धन भरा है। तुम जितना चाहो उतना ले लेना। लेकिन सावधानी इतना रखना कि ! सूर्योदय से पूर्व आ जाना अन्यथा सभी धन बेकार हो जायेगा।

यह लालची ज्ञान में नही था। जल्दी घर जागर अपनी पत्नी को बात बताया। पत्नी भी खुस हो गयी। वह अगली रात्रि की प्रतिक्षा करने लगा। आज का दिन उसे अति बड़ा लगने लगा। ऐसे सोचते रात हो गई। यह व्यापारी पत्नी के साथ महात्माजी के द्वारा बताये गये रास्ते पर चल दिया। साथ में दो तीन झोले भी ले लिया। कुआ के पास पहुँचकर महात्मा द्वारा दी गई गोली को मुह में रख लिया। गोली को मुँह में रखते ही प्राकश दिखाई दिया। पूरा कूँवा अनेक जवाहररातो से भार था। हीरा-माणेक, नंग मोती, सोना और हने ओ.....हो.... हो ये तो दोनो की भाग्य ही बदल गया। वह भ्रमित हो गया कि क्या रखे क्या न रखे। अंत में वह झोले को भरने लगा। बराबर दबाकर भर लिया। सूर्योदय से पहले ही घर आ जाना ता। इस कारण से थैला भरकर लेकर चल दिया। वजनदार होने के कारण थकान लगने लगी। और चलने की हिम्मत खत्म हो रही थी। तो व्यापारी की पत्नी बोली कि ''हम थैले से थोडा निकाल दे तो वजन कम हो जायेगा,'' तो जल्दी से घर पहुँच जायेगे''। इस लालचीने पत्नी की सलाह नही माना। घसीटते-धसीटते ठोकर खाते चलता रहा, कभी गिरता कभी लपतटकर चलता इस कारण से उसकी शरीर छिल गई थी। लेकिन लालच वस वजन कम नही किया। अन्तत: थोडीदूर पर ही सूर्योदय हो गया।

महात्मा के कहे अनुसार वह सूर्योदय से पहले घर नही पहुँच सका। थैले में भरा सम्पूर्ण धन कंकड पत्थर में बदल गया। यह देखकर उसकी पत्नी लालची पति पर गुस्से हुई। अधिक लालच करने पर कुछ मिला भी नही अपितु शरीर छिल गया। आपने ऐसी लालच न की होती तो थोडा कम ही जवेहरात मिला होता तो भी सुखी रहते। लेकिन अब क्या ? लालची व्यापरी अधिक पश्चाताप किया। लालच के कारण सब कुछ खो दिया और दुखीभी हुआ।

यह बात करके दादाजी बोले देखो बच्चो ! यह लालची लालच के कारण कितना खोया। लालची के पास सम्पत्ति होने के बाद श्री शांति नही होती है। कितना भी सुख हो अधिक पाने की लालच मे वह सुख नही भोग सकता है। इन लालची द्वारा संचित धन किसी के उपयोग में नही आता है। इसे धूल समान माना जाता है। इस लिये कहते है कि ''अत्याधिक लालच पाप की जड होती है।'' अब बात समझ में आई ? बच्चे दादा की बात सुकनर खुश हो गये।

मित्रो ! आप भी इसे सुनकर खुश हुए होगे। और ज्ञान भी मिला होगा। हमें संतोष के साथ अपने आराध्यदेव स्वामिनारायण भगवान जिस अवस्था में रखे उसमे सुख पूर्वक रहे और भगवान का भजन करें।

श्री स्वामिनारायण

॥ भक्तिसुधा ॥

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से)
(एकादशी सत्संग सभा प्रसंग पर कालुपुर मंदिर हवेली) "हमारे मन के अन्दर की समझ बदला है"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

हम जो सत्संग सभा करते है उसका उद्देश्य क्या है ? तो अपनी आत्मा की शांति के लिये, स्वयं के कल्याण के लिये। हमारे विचारो के कारण हमारी चित्त में उठते तरंग को शांत करने के लिये हमे अधिक समझदारी मिले और अपनी अध्यात्मिक 'प्रगति' हो उसी के लिये ये सब किया जाता है। सत्संग के बाद घर जाते है और आत्मचिंतन एवम् मनन करके अपने मन का समझना पडता है। अपने अंदर का मन दो प्रकारका होता है चेतन मन और अचेतन मन . अचेतन मन ही कारण है । अपना स्वभाव क्यो कि ? हम देखते है कि प्रत्येक व्यक्ति का स्वभाव अलग-अलग होता है। इसमें हम देखे तो अकसर तीन प्रकार के विचार वाले दिखाई देते है। 'सकारात्मक', 'नकारात्मक' और स्थित प्रज्ञ है। जो व्यक्ति सकारात्मक सोचता है वह क्या करेगा तो उसे हम कोई कार्य करने के लिये कहे तो नही आने पर भी कहेगा कि कार्य हो जायेगा । दूसरा व्यक्ति जिसका नकारातमक मन है । वह अवश्य कहेगा कि मुझसे नही होगा, शायद उसको अचछी तरह से आता है। तब भी नकारात्मक उत्तर देगा । और जो स्थित प्रज्ञ होता है वह हाँ भी नही कहता और ना भी नही बोलता है। तो हमारे अन्दर जो संकल्प विकल्प होता है। वह पूर्व जन्म का जो सूक्ष्म शरीर के साथ अचेतन मन में भरा रहता है। उसकी मात्रा कितनी है ? तो छोटा बालक होता है। जो नवजात होता है। जिसकी आँख बंद होती है। जो अभी तक बाहर की दुनियाँ नही देखा होता है तो कभी हँसता है। नींद में भी होता है। कभी उसको डर भी लगता है। इसलिये धबरा जाता है। तो कहने का यह अर्थ है कि उसके मन में जो भय, शोक, हर्ष, थे जो भावनाये है। उसका मुख्य कारण पूर्व जन्म का अचेतन मन है। उसमें जो संकल्प-विकल्प होता है। ये सब अंदर भरा रहता है। और वह बाहर की दुनियाँ देखा नही होता है इसलिये अधिक याद आती है। जैसे-जैसे उसके मन पर बाहर का प्रभाव पडता जाता है। वैसे वैसे पूर्व जन्म का भूल जाता है। हमें भी ऐसा कभी-कभी हो जाता है। कि जिसे पहले देखे रहते है। अधिक समय के बाद वह भूल जाते है। इसी प्रकार जब शरीर छूटती है तब असीम वेदना होती है। इसलिये उस जिंदगी की बात भूल जाते है। और भगवान की ईच्छा भी ऐसी होती है क्यो कि ? यदि हमें प्रत्येक जन्म की बाते याद रहे तो जीना मुश्किल हो जाये । इसलिये जीव के उपर भगवान की कृपा है। फिर भी १००% भूलता नही है। वह अचेतन मन में रह जाता है। कई को स्वप्न आता है। वह ऐसा होता है कि जो देखा भी न हो और सुना भी नहि होता है। हमारे जीवन में ऐसी घटना भी नही हुई हो ऐसा स्वपपन आ जाता है । जो अचेतन मन के कारण होता है । स्वपन अर्थात् बुद्धि रहति मन की कल्पना' हम सो जाते है तो बुद्धि शांत हो जाती है। यदि बुद्धि अपना कार्य चालु रखे तो नींद ही नही आयेगी। कभी कभार नींद भी नही आती है। कई बार हम देखते है कि जो जन्म से अन्धे होते है उन्हें भी स्वप्न आते है। ये पूर्व जन्म के संकल्प-विकल्प के आधार पर पूर्व के अचेतन मन में पूरे रुप से आता है। कभी हम सो जाते है तो ख्याल नही होता है कि कब प्राप्त: हो जाता है । तब अपना मन शांत होता है । उसे सुषुप्ति अवस्था कहा जाता है।

हमारे अचेतन मन में अनेक जन्मो के कर्म भरे रहते है ।ुसे शांत शुद्ध करने में समय लगता है। तो अचेतन मन को शांत करने के लिए क्या करना चाहिए ? तो मन को टकोर करते रहना चाहिए, विचार करके समझाना और मन में विचार आये तब अन्तरआत्मा को पूछकर करना चाहिए जो मैं कर रहा हूँ वह योग्य है या नहीं क्योकि ऐसा नहीं करने पर आप गिर जायेगे । उसे मानना है कि नही आप पर निर्भर करता है । नही तो अनेक जन्मो का अज्ञान, नेगेटिव, पोजीटिव जो मन में भरा है । अनुकूल समय मिलने पर निकलता ही है। इस लिये हमे तैयार रहना चाहिए। यह सत्संग के द्वारा विवेक से सिखना है कि इसमें पड़े की नही विचारो को महत्व नही देगे तो आयेगे और चले जायेगे। मन को बोल दीजिये आप को जो करना है करें आप की बात में मेरी सहमति नही है । इस कारण से उसकी चंचललीला बंद हो

जाती है। उदाहरण स्वरुप जब हम लोग सत्संग के लिये घर से निकलते है। तो कितने लोगो से मिलते है कितना कुछ देखने को मिलता है। लेकिन उसमें सो हम देखना चाहते है वही देखते है। जो याद रखना चाहते है याद रखते है। प्रत्येक बात को व्यक्ति महत्व नही देता है। उसी प्रकार मन में विचार आते है उसे देखना-जानना समझना और अपने ध्येय के अनुसार योग्य विचार हो वही लेना है। प्रत्येक विचार के प्रभाव में नही आना चाहिए। इस प्रकार अंदर की समझदारी बदलना है।

दूसरा उपाय यह है कि भगवान के नाम लगातर स्मरण करते रहिए तथा सकारात्मक सोचते रहिए। यदि सकारात्मक द्रष्टिकोण हो जाते तो किसी भी परिस्थिति में जीवन को व्यतीत किया जा सकता है। शब्दो से अधिक चित्र का प्रभाव जीवन पर पडता है। उदाहरण स्वरुप छोटे बच्चे को यदि कुछ हमें सिखाना होता है तो चित्र बनाकर सिखाते है। इसी प्रकार विद्यालय में भी सिखाया जाता है। यह शीघ्रता से याद रहता है। उसी प्रकार जब हम परमात्मा को याद करते है या जप करते है तब महाराज का ध्यान करके करना चाहिए . और सखा भाव से भक्ति करना चाहिए । जैसे कि अपनी बहन को या नजदीक का कोई रिश्तेदार हो तथा अपना लगाव उनसे अधिक हो तो उन्हे याद करने के लिये आँख नही बंद करना पडता है। मन में चेहरा याद आ जाता है। तो ऐसा लगाव भगवान के प्रति भी रखना चाहिए। तो भगवान की मूर्ति सामने आने पर भगवान द्वारा की गई एकाधलीला का चरित्र याद आ जायेगा।

इस प्रकार करते करते हमारे मन में अन्दर में व्याप्त संसार के प्रवाह रुपी ''तरंगे'' शांत हो जाती है। हमारा मन अच्छे कार्य करता है। महाराज की मूर्ति से जुडेगा। ये कथा-सत्संग सब कुछ इसीलिये है। कि हमारा मन शुद्ध हो जाये। विनाशी वस्तु में जो हमारा अशुद्ध चित्र जुडा है। उसमें से अविनाशी के साथ जुडे । तथा हम लोगो की अविनाशी सुख प्राप्त हो। तो महाराज आप सभी को शक्ति दे। महाराज के चरणो में प्रार्थना।

●

"मै मनुष्य बनू यही अधिक है"

- लाभुबेन मनुभाई पटेल (कुंडाल, तह. कडी)

आये है तो खाना, पीना, सोना, जागने में रचे-बसे रहते है । कभी दूसरे के (स्वयंभी) लिये उपयोगी बने तो थोडा जीवन का आनन्द ले सकते है। शेष लोग के मुँह से सुनते है कि इस जीवन में क्या है? गधा दौड, घडी भर आराम नही, कोई भी उपयोगी नही है। इसे कैसा जीवन कहेगे ? तब यह कवि वचन याद आता है।

"मानशो ने के जिंदगी रुपे सजा लीधी,
जिंदगी नी कदाच ना तमे मजा लीधी ।"

जीवन भगवान द्वारा प्रदात्त एक दिव्य प्रसाद है। उस प्रसाद के योग्य हम बनते नही है। हम नसीब और लोगो को बोलते है। ये हम भूल जाते है कि जो देगे वही मिलता है। जैसे बोयेगे बैसा ही काटेगे। जो करेगे वही भोगेगे। बबूल बोकर आम की ईच्छा रखे तो हम मूर्खो के सरदार है। जीवन भर लोगो पर गुस्सा किये है। तो हमे प्यार कहा से मिलेगा।

जीव्या झाझो रवार लड्ने, क्याथी जड्ये प्यार लड्ने
कूल समा थी रीते थड्ये बैठा दिये भार लड्ने ।"

भला भाई, कितना वजन धारण करके हम लोग बैठे है? भार अंदर का भी होता है बाहर का भी होता है? अंदर का भार भयानक होता है। यह याद रखियेगा। बैर, गुस्सा, ईर्ष्या, द्वेष, निंदा, चुगली, त्यग्य, अहंकार, मोहमाया, लालच, कामेच्छा, ये अन्दर के भार है। इसलिये संतोने इन भारो को फेकने की बात कहे है। यह भार त्याग देने से हम हलके-फूलके हो जाते है। इन सभी आन्तरिक अवगुणो को सत्संग अच्छे साथ, अच्छेवचन और अच्छे व्यवहार से दूर कर सकते है किसी कविने कहा है कि

"वजन करे ते हारे, मनवा,
भजन करे ते जीते ।"

खराब भार ये अवगुण और सच्चा व्यवहार सद्गुण ये भजन है। भजन करना है कि भजन करना है यह अपने हाथ में है। ये सब करने के लिये कहाँ अपने पास समय है? हा? हमें निंदा करना, गप्पे मारना, व्यर्थ प्रवृत्तियाँ करना हो, टहलना हो तो समय ही समय होता है। किसी भी देश में इतना समय नही है। पूछियेगा, विदेश से आये अपने मित्रो या सगे सम्बन्धियो से की ऐसा है क्या? एक तरफ हमे अच्छा करने का समय ही नही है। और तो और लोग कहते है कि आई हैव नो टाईम ? संसार में आये है तो हमें अपना कर्तव्य और जीवका आधार तो रखना ही पडेगा। कमाना तो पडेगा। लेकिन कुछ सीमा ता कही पैसा आवश्यकता है । पैसा कमाना आवश्यक है। उतने ही अच्छे जीवन व्यतीत करना भी आवश्यक है। इसलिये हम किसी के लिये अवरोधन बने तथा सभी के प्रति सहयोग की भावना रखें। ऐसे जीवन जीने का विचार करना चाहिए । कवि इसी लिये कहता है कि ''हूँ मानवी मान याउ तो घणु।''

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर खरमास धुन महोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से एवम् समस्त धर्म कुल के आशीर्वाद से तथा कालुपुर मंदिर के महंत स.गु. शा. स्वा. हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा से ता. १६ दिसम्बर २०१८ से पवित्र खरमास में श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के शुभ सानिध्य में समस्त धर्मकुल की उपस्थिति में प्रसादी के भव्य मंडप में और प्रातः ५ से ५-३० तक हजारो संत हरिभक्तो सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण महामंत्र को बोला गया । वहाँ पर स्वयं श्रीहरि सभा में प्रत्यक्ष हाजरा हजूर हो ऐसा सबको एहसास हुआ । ३००० जितने हरिभक्तोने पूरे मास की और दैनिक धून ५००० हरिभक्तो द्वारा की गयी । पूरे खरमास में प्रातः जगकर श्री नरनारायणदेव के सामने महा अलौकिक धुन का लाभ हजारो मुमुक्षुओने लेकर जीवन सफल किये । जिसे भजन करना या बैठकर भजन कर रहे थे तो कुछ लोग बड़े-खड़े भजन करते दिखाई दिये । पूरे खरमास में भंडारी जे.पी. स्वामी, कोठारी जे.के. स्वामी, योगी स्वामी, भक्ति स्वामी आदि संत मंडल और हरिभक्तोने अधिक प्रेरणादयक सेवा करके ठाकुरजी की कृपा प्राप्त किये ।(कोठारी शा. नारायणमुनि स्वामी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में नारायणपुरा मंदिर के रजत जयंती उत्सव के उपलक्ष्य में अखंड धुन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल की खुशी से श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपुरा में विराजमान संकल्प मूर्ति सर्वोपरि श्री घनश्याम महाराज के रजत जयंती महोत्सव के उपलक्ष्य में श्रीहरि प्रस्थापित नव महामंदिरो में अखंड धुन का आयोजन उसमें से एक श्री स्वामिनातारण मंदिर कालुपुर में ता. २३-१२-१८ को (रविवार) प्रातः ५-३० से ५-३० शायं तक स.गु. शा.स्वा. हरिॐप्रकाशदासजी के सुंदर आयोजन द्वारा अ.नि. स.गु. स्वा. श्री हरिदासजी, अ.नि. स.गु. स्वामी स्वयंप्रकाशदासजी और अ.नि. स्वामी धर्मकिशोरदासजी के याद में और अ.नि. वसंताबेन भगवानभाई पटेल की पुण्य स्मृति में स.गु. स्वामी आनंदप्रियदासजी की प्रेरणा से अखंड महामंत्र धुन का भव्य आयोजन किया गया था ।

इस अवसर पर महाप्रसाद के यजमान अ.सौ. पीनाबेन नवीनभाई पटेल परिवार रहा था ।(कोठारी शा. मुनि स्वामी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर धमाणसा प्रथम पाटोत्सव कथा शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से एवम् प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से उसी सतह स.गु. महंत शा. स्वामी हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा से मार्गदर्शन से तथा स.गु. भंडारी स्वामी जयप्रकाशदासजी (कालुपुर) तथा समस्त सत्संग समाज एवम् श्री नरनारायणदेव युवक मंडल धमासणा के सुंदर आयोजन द्वारा श्री स्वामिनारायण मंदिर धमाणसा का प्रथम वार्षिक पाटोत्सव के उपलक्ष्य में ता. ३-१२-१८ से ७-१२-१८ तक श्रीहरि स्मृति पंचान्ह रात्रि पारायण स.गु. शा. स्वा. दिव्यप्रकाशदासजी (नारायणघाट महंतश्री) के वक्ता पद से संगीत के मधुर वातावरण में पूर्ण हुई । इस अवसर पर भव्य शाकोत्सव भी मनाया गया । कथा में संहिता पाठ में स.गु. पुराणी स्वामी बालस्वरुपदासजी (धमासणा) पधारे ते ।

शाकोत्सव की महिमा की कथा स.गु. शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) अपने मधुर वाणी में सभी को सुनाते थे ।

इस अवसर पर प.पू. लालजी महाराजश्री ता. ७-१२-१८ के दिन आये थे । ठाकुरजी की आरती किये । भव्य शाकोत्सव को रखे तथा सभी को दर्शन भी कराये । कथा के समय सभा का संचालन स.गु. शा. स्वा. गोपालजीवनदासजी (प्रांतिज) ने किया था । इस अवसर पर धामो-धाम से संत और सांख्ययोगी बहने आयी थी । गाँव के सभी हरिभक्त यजमान बनकर लाभ लिये । धमासणा और नवधोल गाँव के हरिभक्तोने कथामृत का पान किये । देव-दर्शन-धर्मकुल दर्शन और संतो की अमृतरुपी वाणी का लाभ लेकर शाकोत्सव का प्रसाद लेकर धन्य हुए ।(कोठारीश्री धमासणा मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर रामनगर साबरमती श्री वचनामृत जयंती

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से एवम् प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री के आशीर्वाद से महिला मंडल

साबरमती द्वारा ता. ११-१२-१८ के दिन श्री स्वामिनारायण मंदिर रामगनर में वचनामृत जयंती का उत्सव मनाया गया १६ महीने में वचनामृत (२७३) की २४१ पारायण किये थे । इस अवसर पर हवेली (कालुपुर) में से सांख्ययोगी बहने आई थी । और कथा वार्ता की थी । वचनामृत ये की पूजा और सामुहिक आरती करके सभी लाभ और प्रसाद प्राप्त किया । (महिला मंडल - साबरमती)

जेतलपुरधाम में खरमास धुन महोत्सव

सर्वजनो के संकल्प को पूरण करने वाले ऐसे महाप्रतापी श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज के परम पवित्र सानिध्य में और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से उसी प्रकार जेतलपुरधाम में स.गु. महंत पू. शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी, पू. शास्त्री श्री पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से और स.गु. महंतश्री के.ी. स्वामी के सुंदर आयोजन द्वारा पूरे खरमास जेतलपुर धाम में प्रसादी के सभा मंडप में जेतलपुर के संत मंडल और जेतलपुर और दशकोशी के मुमुक्षु हरिभक्तो ने प्रात: श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुन किये थे ।(महंत के.पी. स्वामी)

मेडा (मेढा) गाँव में नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनो का) प्राण प्रतिष्ठा और भाईयो के मंदिर का शताब्दी महोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से उसी प्रकार प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से पू. सां. कंचनबा कुंदबना की प्रेरणा से कालुपुर मंदिर के भूतपूर्व ट्रस्टी प.भ. रतिभाई खीमजीभाई (मेडा) तथा कोठारी राजूभाई के सुंदर मार्गदर्शन से समस्त हरिभक्तो के सहयोग से ता. १०-१२-१८ से १४-१२-१८ तक बहनो का नवीन श्री स्वामिनारायण मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव तथा भाइयो के मंदिर का शताब्दी महोत्सव उल्लासपूर्वक मनाया गया । इस अवसर के उपलक्ष्य पर श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचान्ह पारायण स.गु. पुराणी स्वामी ध्यानप्रियदासजी (बावला मंदिर के महंतश्री) गुरु ध्यानि स्वामी के वक्ता पद पर से संगीत के मधुर ध्वनि में पूर्ण हुआ । सम्पूर्ण कथा के समय सभा का संचालन स.गु. शा. स्वामी नारायणमुनिदासजी (कोटा मंदिर के महंतश्री) उसी प्रकार स.गु. महंत शा. स्वामी दिव्यप्रकाशदासजी (नारायणघाट)ने सुंदर रुप से कहे थे ।

ता. १४-१२-१८ को प्रात: हमारे भावि आचार्य १०८ श्री लालजी महाराजश्री आये थे । उनके शुभ हाथो द्वारा ठाकुरजी की प्राण प्रतिष्ठा वेदोक्त विधिसे पूर्ण किये । तथा सभा में सभी को आशीर्वाद दिये । इस अवसर पर सभी बहनो को दर्शन-आशीर्वाद देने के लिये प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री आये थे । कालुपुर मंदिर के पू. महंत स्वामीने तीन दिन आकर लाभ दिये । धामो-धाम से आये संतोने अमृतवाणी का लाभ दिये । धामो धाम से सांख्ययोगी बहने भी यहाँ पर आयी थी ।

कथा में आने वाले जन्मोत्सव एवम् उत्सव को उल्लास पूर्वक मनाया गया । मेडा गाँव के समस्त हरिभक्तो - युवक मंडल, महिला मंडल आदिने श्रद्धा पूर्वक सेवा प्रदान किये । इस अवसर पर गाँव की लडकियो को भेंट प्रदान किया गया था ।(कोठारीश्री राजूभाई - मेडा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर टांकिया

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से ता. २४-१२-१८ के दिन श्री स्वामिनारायण मंदिर टांकिया में प.पू. लालजी महाराजश्री के शुभ हाथो द्वारा भव्य शाकोत्सव मनाया गया था ।

इस अवसर पर तीर्थो से आये हुए संतो ने शाकोत्सव की महिमा बताये थे । अन्त में प.पू. लालजी महाराजश्री खुब खुश होकर आशीर्वाद दिये । ऐसे भव्य समूह शाकोत्सव में डांगरवा वडू, आनंदपरा, करजीसण, वेडा, भाउपुरा, सोजा, धारी आंबा, बोरु आदि गांव के भक्त मिलकर आयोचन किये ते । दस हजार जितने भक्तोने शाकोत्सव का लाभ लिये तथा धन्य हुए ।(शा.स्वा. माधवप्रियादास - स्वा. मंदिर टांकिया)

कोटेश्वर गुरुकुल में शाकोत्सव को मनाना

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से तथा पू. शा. पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) के मार्गदर्शन से श्री सहजानंद गुरुकुल कोटेश्वर में २३-१२-१८ रविवार के दिन रामनगर (साबरमती) समस्त सत्संग समाज की तरफ से भव्य शाकोत्सव मनाया गया था । इस अवसर पर पू.शा. व्रजभूषण स्वामी, पू. उत्तमप्रिय स्वामी आदि संतोने कथावार्ता करके सुंदर लाभ दिये ।(शा. चैतन्यस्वरुपदासजी - गांधीनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हिम्मनगर का २९ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से तथा हिम्मनगर मंदिर के महंत शा. प्रेमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से ता. १०-१२-१८ के दिन प.भ. पूंजाभाई जोईताभाई तथा प्रबोधभाई पूंजाभाई और राजेशभाई पूंजाभाई परिवार के तरफ से श्री स्वामिनारायण मंदिर हिम्मनगर में विराजमान ठाकुरजी का २९ वाँ पाटोत्सव प.पू. लालजी महाराजश्री के शुभ हाथो द्वारा विधिवत रुप से पूर्ण हुआ । सर्व प्रथम प.पू. लालजी

महाराजश्रीने ठाकुरजी का अन्नकूट आरती उतारते निर्माणाधीन मंदिर का निरीक्षण करके सभा में आकर सभी को आशीर्वाद प्रदान किये । इस अवसर पर जेतलपुर, वाली, बिलीया, नारणपुरा, सापावाडा, लालोडा, प्रांतिज और अहमदाबाद आदि तीर्थो से संत आये थे । युवक मंडल और महिला मंडल ने प्रेरणा स्वरुप सेवा प्रदान किये थे । (विपुर भगत - हिम्मनगर मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर गाँधीनगर (से-२) का १० वाँ पाटोत्सव एवम् कथा पारायण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा महंत शा. स्वामी पी.पी. स्वामी और समस्त सत्संग समाज तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के सुंदर आयोजन से श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (से-२) का १९ वाँ पाटोत्सव विधिवत रुप से मनाया गया ।

पाटोत्सव के उपलक्ष्य में ता. ८-१२-१८ से ता. १२-१२-१८ तक श्रीमद सत्संगिभूषण रात्रीय पंचान्ह पारायण स.गु. शा. स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी के वक्त पद से हुआ था । पाटोत्सव के यजमान प.भ. रणछोडभाई विठ्ठलभाई पटेल अ.सौ. सुशीलाबेन रणछोडबाई पटेल (कुडासण) परिवारने किया था ।

ता. १२-१२-१८ को प.पू. लालजी महाराजश्रीके शुभ हाथो द्वारा ठाकुरजी का षोडशोपचार अभिषेक और अन्नकूट आरती की गयी । इसके बाद सभा में प.पू. लालजी महाराजश्रीने सभी संतो को आशीर्वाद दिये । बहनो को दर्शन आशीर्वाद देने के लिये प.पू.अ.सौ. गादीवालश्री भी आये थे । प्रसंगोचित सभा में कालुपुर मंदिर के पू. महंत स्वामी, गांधीनगर मंदिर के पू. महंत पी.पी. स्वामी तथा पू. शास्त्री राम स्वामी (कोटेश्वर) इत्यादि तीर्थो से आये हुए संतोने भगवान श्रीहरि के लीला चरित्र की सुंदर बात किये । अंत में सभी हरिभक्त प्रसाद ग्रहण करके धन्य हुए । (शा. व्रजभूषण स्वामी - गांधीनगर से-२)

श्री स्वामिनारायण मंदिर खेरोल तृतीय शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा महंत शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (गांधीनगर से-२) की प्रेरणा से खेरोल श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. १६-१२-१८ के दिन तृतीय भव्य शाकोत्सव स.गु. महंत शा. स्वामी हरिकृष्णदासजी के शुभ हाथो द्वारा उल्लासपूर्वक मनाया गया । जिसके मुख्य यजमान डॉ. महेन्द्रभाई के. पटेल का परिवार था । तीर्थो से आये हुए संतोने शाकोत्सव की महिमा बताये । गाँव के सभी भक्तोने तन, मन और धन से सेवा प्रदान किये थे । सभा का संचालन शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजीने सम्भाला था । गाँव के समस्त हरिभक्तोने प्रसाद लेकर धन्यता अनुभव किये । (शा. स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी - गाँधीनगर)

सोजा (ता. कलोल) गाँव में पवित्र खरमास में श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचान्ह पारायण

सर्वोपरि सर्व अवतारो के अवतारी श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से तथा प.पू. लालजी महारजश्री के आशीर्वाद से उसी प्रकार स.गु. स्वामी हरिचरदणदासजी (कलोल) तथा स.गु. महंत शा. पी.पी. स्वामी (गांधीनगर से-२) की प्रेरणा मार्गदर्शन से सोजा गाँव में ता. १९-१२-१८ से ता. २३-१२-१८ तक श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचान्ह पारायण (लोज आगमन से स्वधाम गमन तक) स.गु. शास्त्री स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) के वक्ता पद से संगीत के अच्छे सुरो से पूर्ण हुई । प.भ. मयुरभाई नारणदास पटेल, अ.सौ. काशीबेन मयुरभाई पटेल, पुत्र शैलेषभाई, अ.सौ. नीताबेन शैलेषभाई आदि परिवार की तरफ से कथा का प्रबन्धकिया गया था । कथा में आने वाले उत्सवो को मनाया गया । इस अवसर पर पूज्य लालजी महाराजश्री आये थे । तथा खुश होकर सभी भक्तो को आशीर्वाद प्रदान किये । बहनो को दर्शन आशीर्वाद देने हेतु गादीवालाश्री भी आये थे । और बहनो से काफी खुश हुई । इस अवसर पर संत स.गु. महंत शा. स्वा. हरिकृष्णदासजी आदि संत आये थे । सम्पूर्ण कथा के समय सभा का संचालन स.गु. शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी सम्भाले थे । सोजा गांव के समस्त हरिभक्तोने कथा का श्रवण किया तथा धन्य हुए । (शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी ० गांधीनगर)

वागोसणा गाँव में श्रीमद् सत्संगीजीवन त्रिदिवियस कथा एवम् शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शा. पी.पी. स्वामी (गांधीनगर से-२) की प्रेरणा मार्गदर्शन से वागोसणा गाँव में ता. २१-१२-१८ से २३-१२-१८ तक मुख्य यजमान पटेल साकलचंदभाई वल्लभदास पटेल और पुरीबेन साकलचंदबाई और सहयजमान पटेल त्रिभोवनभाई शिवरामदास के तरफ से श्रीमद् सत्संगिजीवन त्रिदिवसीय रात्रि कथा स.गु. शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (गाँधीनगर) ने वक्तापद पर कार्य किये । इस अवसर पर शाकोत्सव भी मनाया गया था । कथा के समय तीर्थो से आये संतो ने अपने अमृतवाणी का लाभ दिये ।

वागोसणा गाँव के समस्त हरिभक्त कथा सुनकर और शाकोत्सव का प्रसाद लेकर धन्य हुए । (कोठारीश्री वागोसणा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बदपुरा श्री विदुरनीति पंचान्ह पारायण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा महंत शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (गांधीनगर से-२) की प्रेरणा मार्गदर्शन से बदपुरा गाँव में अ.नि. चौधरी वेलजीभाई जोठाभाई तथा गं.स्व. चौधरी शांताबेन वेलजीभाई परिवार की तरफ से ता. २५-१२-१८ से २९-१२-१८ तक श्री विदुरनीति पंचान्ह पारायण स.गु. शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) के वक्ता पद से संगीत मय वातावरण में पूर्ण हुआ । इस अवसर पर प.पू. लालजी महाराजश्री आये थे । और कभी भी पूर्णाहुति की आरती किये सभी भक्तो को आशीर्वाद प्रदान किये थे । बहनो को दर्शन आशीर्वाद देने के लिये प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री भी आये थे । पूरे कथा सभा का संचालन स.गु. शा. स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (गांधीनगर)ने सम्भाला था । गाँव के समस्त हरिभक्तोने तन, मन और धन से सेवा प्रदान किये थे ।(कोठारीश्री, बदपुरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोल (जूना चोरा) में पवित्र खरमास में श्रीमद् बागवत सप्ताह पारायण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. स्वामी हरिचरणदासजी (कलोल) और स.गु. शा. पी.पी. स्वामी (गांधीनगर महंतश्री) की प्रेरणा से अ.नि. शारदाबेन रतिलाल पंचाल के स्मरण में श्री दिलीपभाई रतिलाल पंचाल के तरफ से २६-१२-१८ से ३०-१२-१८ तक श्रीमद् भागवत पंचान्ह पारायण स.गु. शा. स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (गांधीनगर) के वक्ता पद से संगीतमय वातावरण में पूर्ण हुआ । इस अवसर पर कलोल तथा आस-पास के भाविक भक्तोने कता का रसपान किया तथा जीवन धन्य किये । कथा के समय सभा का संचालन स.गु. शा. स्वा. छपैयाप्रसाददासजीने सम्भाला था । कथा की पूर्णाहुति स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी के शुभ हाथो द्वारा की गई । (शा. ब्रजभू,ण स्वामी - गांधीनगर(

पवित्र खरमास में शीलज गाँव में श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण

सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से एवम् लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा स.गु. शा. पी.पी. स्वामी महंतश्री गांधीनगर) के मार्गदर्शन में ता. ३१-१२-१८ से ६-१-१९ तक पविर खरमास में शीलज गाँव के आँगन में एस.पी. रींग रोड के पास श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण स.गु. शा. स्वामी चैतन्यस्वरुपदासजी (गाँधीनगर) के वक्ता पद से पूर्ण हुई।

इस अवसर पर प.पू. लालजी महाराजश्री आये थे । तथा सभा में सभी को आशीर्वाद प्रदान किये थे । बहनो को आशीर्वाद देने के लिये प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री आये थे । सम्पूर्ण कथा के समय सभा का संचालन स.गु. शा.स्वा. सत्यस्वरुपदासजी (मूली) और स.गु. शा. स्वामी नारायणमुनिदासजी (कालुपुर) ने शोभा बढाये थे । यजमान परिवार अलौकिक लाभ लेकर धन्य हुआ । (सत्संग समाज - शीलज)

श्री स्वामिनारायण मंदिर गोमतुपीर खरमास धून

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारयण मंदिर गोमतीपुर - अहमदाबाद पूरे खरमास में प्रातः सभी हरिभक्त मिलकर श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धून किये थे । पूरा मंदिर हरिभक्तो से भर गया था । अंत में सभी को प्रसाद दिया जाता था । (श्री नरनारायणदेव युवक मंडल - गोमतीपुर)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर मूलीधाम खरमास धुनमहोत्सव

मूलीधाम में बिराजमान सर्वोपरी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से उसी प्रकार समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत स्वामी श्यामसुंदरदासजी की सुंदर मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली में स.गु. ब्रह्मानंद सभा मंडप में पवित्र खरमास में प्रात श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून सभी हरिभक्त समूह में पूरे खरमास कर किये ।(कोठारी ब्रज स्वामी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर सुरेन्द्रनगर का १३ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

मूलीधाम में बिराजमान सर्वोपरी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ आज्ञा से यहाँ के मंदिर के स.गु. महंत स्वामी प्रेमजीवनदासजी की प्रेरणा से सुरेन्द्रनगर मंदिर में विराजमान देवो का १३ वाँ वार्षिक पाटोत्सव उसी तरह बहनो के नूतन

मंदिर में मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव ता. १८-१-१८ से २४-११-१८ को धूमधाम से मनाया गया था।

इस अवसर पर श्रीमद् सत्संगिजीवन सप्ताह पारायण कथाकार शास्त्री श्रीजी स्वामीजी वक्ता पद पर थे। व्याखानमाला में स्वा. सत्संग सागरदासजी और संहिता पाठ में स्वामी त्यागवल्लभदासजी थे। ता. २४-११-१८ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री संत पार्षद मंडल के साथ आये थे। सर्व प्रथम बहनो के मंदिर में ठाकुरजी की पुनः मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा विधिवत रुप से करके तथा निज मंदिर में ठाकुरजी की आरती किये। सभा में विराजमान होकर सभी संतो-हरिभक्तो को आशीर्वाद प्रादन किये। तीर्थो से संत हरिभक्त आये थे। कथा के यजमान .नि. नारायणभाई देवराजभाई कानाणी (बलदाणा) परिवार रहा था। सह यजमान महेता लीलावंतीबेन यशवंतलाल और बहनो के मंदिर निर्माण के मुख्य यजमान सां. कमलाबा, कोकिलाबा, और उषाबा थी। सभा का संचालन शा. प्रेमवल्लभदासजी ने किया था। सम्पूर्ण आयोजन कोठारी स्वामी कृष्णवल्लभदासजी के मार्गर्शन में हुआ था। श्री नरनारायणदेव युवक मंडल और महिला मंडल ने सुंदर प्रदान की थी। अन्य सेवा में विश्वस्वरुप स्वामी, शांति स्वामी, राजू स्वामी, भक्ति स्वामी, देव स्वामी, नित्यप्रकाशदास स्वामी और कनु भगत थे। (शैलेन्द्रसिंह झाला)

श्री स्वामिनारायण मंदिर रामगढ़ ६४ वाँ पाटोत्सव

मूलीधाम में बिराजमान सर्वोपरी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से इसी तरह स.गु. महंत स्वामी प्रेमजीवनदासजी (सुरेन्द्रनगर) की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर रामगढ का ६४ वाँ पाटोत्सव प.भ. बलदेवभाई लवजीभाई पटेल यजमान पद पर ता. १४-१२-१८ से १६-१२-१८ को मनाया गया। इस अवसर पर त्रिदिवसीय भक्त चिंतामणी परचा प्रकरण की कथा स्वामी त्यागवल्लभदासजी और स्वामी सत्संग सागरदाजी के वक्ता पद से हुई। रात्रि में नित्यप्रकाश स्वामीने कथा का लाभ दिये थे।

इस अवसर पर मूली और सुरेन्द्रनगर मंदिर के संत आकर ठाकुरजी की अन्नकूट आरती किये। सभी हरिभक्तोने सुंदर सेवा प्रदान किये। (नटुभाी पी. पटेल)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्यूस्टन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवम् प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से ह्यूस्टन सुगरलैण्ड हिन्दु श्री स्वामिनारायणमंदिर में नवम्बर वीकेन्ड में तुलसी विवाह धूम-धाम से मनाया गया था। भगवान का विवाह तुलसी जीके साथ विधिवत रुप से हुआ था। तुलसीजी और विष्णु भगवान का यजमान बनकर हरिभक्तोने अलौकिक लाभ उठाया। प्रासंगिक सभा में यजमानो तथा आमंत्रित मेहमानो का स्वागत सुव्रत स्वामीने किया। अंत में ठाकुरजी की आरती और नियम के बाद सभी ने प्रसाद ग्रहण किये। (प्रवीण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवम् प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद तथा पार्षद भरत भगत की प्रेरणा से हमारे कोलोनिया के श्री स्वामिनारायण मंदिर मे कार्तिक मास में भव्य तुलसी विवाह पूर्ण हुआ। भगवान के वरघोडा में बहनो ने नंद संतो द्वारा रचित गीत का गायन हुआ। सभा में यजमानो-मेहमानो के स्वागत के पश्चात ठाकुरजी की थाल-आरती और नियम करके सभी ने समूह में प्रसाद ग्रहण किये। (प्रविण शाह)

पारसीप श्री स्वामिनारायण मंदिर

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवम् प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद तथा यहाँ मंदिर के महंत शा. स्वा. अभिषेकप्रसाददासजी के सुंदर मार्गदर्शन से पारसीप के मंदिर में तुलसी विवाह का सुंदर आयोजन किया गया था। भगवान का विवाह तुलसीजी के साथ विधिपूर्वक करके बहनो ने नंद रचित लग्न गीत गाकर तुलसी विवाह मनायी। महंत स्वामीने तुलसी विवाह का महात्म बताये। यजमानो तथा मेहमानो का सन्मान किया गया। तत्पश्चात ठाकुरजी की थाल आरती नियम करके सभीने समूह में प्रसाद ग्रहण किये। (शाह प्रविणभाई)

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

(१) धमासणा मंदिर के पाटोत्सव के अवसर पर अन्नकूट आरती उतारते तथा शाकोत्सव में शाक का वघार करते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री। (२) मेडा (मेढा) बहनो के मंदिर की मूर्ति प्रतिष्ठा तथा भाईयो के मंदिर के शताब्दी पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी की अन्नकूट आरती उतारते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री। (३) बदपुरा गाँव में विदुर नीति कथा श्रवण करते हरिभक्त तथा वक्ताश्री का पूजन करते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री तथा यजमान परिवार।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2018-2020 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2020

શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યૂઝિયમ માં નવનિર્મિત શ્રી નરનારાયણદેવ યજ્ઞ શાલા નો ઉદ્‌ઘાટન કરતે હુએ પ.પૂ. બડે મહારાજશ્રી ।

Praful Kharsani